संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025
RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050

दैनिक घटती घटना

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 21, अंक -12 बुधवार ,13 नवम्बर 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

देश की संक्षिप्त खबरें

उद्धव ठाकरे के हेलीकॉप्टर की दोबारा चेकिंग

मुंबई,12 नवम्बर 2024(ए)। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के हेलीकॉप्टर की चुनाव आयोग के कर्मचारियों द्वारा मंगलवार को दोबारा चेकिंग की गई। इससे एक दिन पहले भी इनके सामानों की जांच की गई थी। दरअसल, उद्धव मंगलवार को उस्मानाबाद में औसा सीट पर प्रचार करने के लिए पहुंचे थे। इस दौरान उद्धव ठाकरे का हेलीकॉप्टर जैसे ही लैंड किया, चुनाव आयोग की टीम वहां पहुंच गई और हेलीकॉप्टर की चेकिंग की गई।

सीआईएसएफ में भी महिलाओं के लिए दरवाजे खुले

नई दिल्ली,12 नवम्बर 2024(ए)। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रीय सुरक्षा में उनकी भूमिका बढ़ाने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की पहली महिला बटालियन के गठन की मंजूरी दे दी है। सीआईएसएफ के प्रवक्ता ने मंगलवार को बताया कि बल उन महिलाओं के लिए पसंदीदा विकल्प रहा है जो केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल में देश की सेवा करना चाहती हैं और बल में उनकी हिस्सेदारी 7 प्रतिशत से अधिक है।

दिव्यांग,महिलाओं और बुजुर्गों को दिए जाएंगे 2500 रुपए

रांची ,12 नवम्बर 2024(ए)। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने झारखंड विधानसभा चुनाव के पहले चरण की वोटिंग से एक दिन पहले धनबाद जिले के बाघमारा में झारखंड के लोगों के लिए बड़ी घोषणा की।

31 विधानसभा,1 लोकसभा सीट पर उपचुनाव आज

» वायनाड में प्रियंका के खिलाफ भाजपा की नव्या...

» सिक्किम की 2 सीटों पर निर्विरोध चुनाव हुआ...

नई दिल्ली,12 नवम्बर 2024(ए)। झारखंड में पहले फेज की 43 सीटों के साथ ही 10 राज्यों की 31 विधानसभा और केरल की वायनाड लोकसभा सीट पर बुधवार को उपचुनाव होंगे।

वायनाड लोकसभा सीट पर उपचुनाव राहुल गांधी के इस सीट को छोड़कर रायबरेली सीट चुनने की वजह से हो रहा है। यहां से उनकी बहन प्रियंका गांधी वाड्रा कांग्रेस प्रत्याशी हैं। कांग्रेस का राज्य में यूडीएफ गठबंधन है। भाजपा की ओर से नव्या हरिदास और लेफ्ट गठबंधन एलडीएफ से सत्यन मोकेरी चुनावी मैदान में हैं।

10 राज्यों की 31 विधानसभा सीटों में से 28 विधायकों के लोकसभा चुनाव में सांसद बनने, 2 के निधन और 1 के दलबदल से उपचुनाव हो रहे हैं। इनमें 4 सीटें एससी और 6 सीटें एसटी के लिए आरक्षित हैं।

उपचुनाव के नतीजे सीधे तौर पर प्रदेश की भजनलाल सरकार की पहली परीक्षा के तौर पर भी देखे जाएंगे। करीब 89 प्रतिशत उपचुनावों में कांग्रेस की जीत हुई है। हालांकि, हरियाणा में जीत के बाद भाजपा का आत्मविश्वास बढ़ा है, लेकिन यदि नतीजे भाजपा के खिलाफ आए तो पार्टी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के सामने सियासी संकट खड़े होने तय हैं।

4 सीटों पर उपचुनाव, विधानसभा चुनाव- 2025 का सेमीफाइनल

बिहार की चार विधानसभा सीटों पर उपचुनाव को 2025 के विधानसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जा रहा है। 2020 के विधानसभा चुनाव में चार में से तीन सीटों पर महागठबंधन का कब्जा था। हालांकि, बिहार में एनडीए की अगुवाई कर रहे नीतीश कुमार को भरोसा है कि लोकसभा चुनाव की तरह उपचुनाव में भी लोग उनके काम के आधार पर जरूर वोट देंगे। दूसरी तरफ तेजस्वी यादव और उनके समर्थक 17 महीने सरकार में रहने के दौरान दी गई नौकरियों का प्रचार कर रहे हैं। अगर इसमें कमी आई तो यह तेजस्वी की साख तो कमजोर करेगा ही, साथ ही उनके नेतृत्व पर भी सवालिया निशान लगाएगा। यह उपचुनाव इलेक्शन मैनेजमेंट के रास्ते राजनीति में सक्रिय हुए प्रशांत किशोर (पीके) की पार्टी जनसुराज के लिए भी काफी अहम है। पीके ने सभी सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे हैं। वे मुकाबले में तो दिखते हैं, लेकिन प्रदेश की जातीय गणित में वोटर उनका कितना साथ देते हैं, यह 23 नवंबर को रिजल्ट के दिन ही साफ होगा।

मध्यप्रदेशःबुधनी में शिवराज तो विजयपुर में सरकार की प्रतिष्ठा दांव पर

राज्य की दोनों विधानसभा सीटें भाजपा के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुकी हैं। लोकसभा चुनाव में विदिशा सीट से जीत के बाद शिवराज ने बुधनी विधानसभा सीट से इस्तीफा दे दिया था। उनके लिए विदिशा लोकसभा सीट छोड़ने वाले रमाकांत भार्गव को भाजपा ने बुधनी से टिकट दिया है।

एक और खास बात यह है कि बुधनी सीट पर अब तक तीन बार उपचुनाव हुए हैं और तीनों बार इसकी वजह शिवराज सिंह चौहान ही रहे। इसके अलावा तीनों उपचुनाव में कांग्रेस ने राजकुमार पटेल को उम्मीदवार बनाया।

विजयपुर सीट से राज्य के वन मंत्री रामनिवास रावत मैदान में हैं। वे इस सीट पर 6 बार कांग्रेस से विधायक रह चुके हैं। कांग्रेस ने उनके सामने आदिवासी नेता मुकेश मल्होत्रा को टिकट दिया है। अब देखना दिलचस्प होगा कि क्षेत्र की जनता छह बार के विधायक और दलबदल के बाद वन मंत्री बने रामनिवास रावत को चुनती है या कांग्रेस पर भरोसा जताती है।

हरोआ के विधायक हाजी नुरुल इस्लाम बशीरहाट से सांसद चुने गए थे, लेकिन सितंबर में उनका निधन हो गया। इस कारण बशीरहाट लोकसभा सीट भी खाली है। हालांकि, उस पर अभी उपचुनाव नहीं हो रहा है।

यह उपचुनाव टीएमसी के लिए ही काफी अहम हैं। आरजी कर मेडिकल कॉलेज में महिला जूनियर महिला से बलात्कार और हत्या की घटना के बाद ममता सरकार के खिलाफ लोगों में गुस्सा देखने को मिला है। इसके अलावा बशीरहाट सहित कई अन्य मामलों में महिला सुरक्षा को लेकर सवाल उठते रहे हैं। राज्य के डॉक्टर अभी भी विरोध कर रहे हैं। ऐसे में उपचुनाव के नतीजे राज्य की राजनीति को नई दिशा दे सकते हैं।

केरलःएक विधानसभा और वायनाड लोकसभा बाइ-इलेक्शन, प्रियंका गांधी का पहला चुनाव

केरल विधानसभा की चेलाक्कारा सीट के अलावा वायनाड लोकसभा सीट पर भी वोटिंग होनी है। चेलाक्कारा से सीपीआई (एम) विधायक के राधाकृष्णन के अलाथुर से सांसद बनने से खाली हुई है। कांग्रेस ने यहां से राम्या हरिदास और भाजपा ने के बालकृष्णन को टिकट दिया है।वहीं, वायनाड लोकसभा सीट पर कांग्रेस ने प्रियंका गांधी को उतारा है। वे पहली बार चुनाव लड़ रही हैं। अगर वे चुनाव जीतती हैं, जो लगभग तय है, तो पहली बार होगा कि गांधी परिवार के सभी सदस्य यानी सोनिया, राहुल और प्रियंका संसद के सदस्य होंगे। सोनिया गांधी के राज्यसभा जाने के बाद अटकलें लगाई गई थीं कि प्रियंका रायबरेली से लोकसभा चुनाव लड़ेंगी। हालांकि, राहुल ने रायबरेली और वायनाड दोनों सीटों से चुनाव लड़ा और जीत के बाद रायबरेली सीट चुनी। भाजपा ने प्रियंका के सामने नव्या हरिदास को टिकट दिया है। वे भाजपा महिला मोर्चा की राज्य महासचिव हैं। साथ ही कोझिकोड नगर निगम में दो बार की पार्षद और भाजपा पार्षद दल की नेता हैं। लेफ्ट गठबंधन एलडीएफने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया नेता सत्यन मोकेरी (70) चुनावी मैदान में हैं। मोकेरी इस समय किसान विंग अखिल भारतीय किसान सभा के राष्ट्रीय सचिव हैं।

असमःदोनों पक्षों से सांसदों के रिश्तेदार चुनाव लड़ रहे, वंशवाद फिर भी मुद्दा

राज्य की पांच सीटों में से दो पर सांसदों के रिश्तेदार उपचुनाव लड़ रहे हैं। बारपेटा के सांसद फणि भूषण चौधरी की पत्नी दीप्तिमयी बोंगाईगांव सीट से असम गण परिषद के टिकट पर चुनाव लड़ रही हैं। वहीं, कांग्रेस ने धुबरी सांसद रकीबुल हुसैन के बेटे तंजील को सामागुड़ी से मैदान में उतारा है।

मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने तंजील के टिकट पर कहा कि कांग्रेस वंशवाद की राजनीति करके प्रतिभाशाली युवाओं को राजनीति में शामिल होने से रोक रही है। पलटवार करते हुए विधानसभा में विपक्ष के नेता देबब्रत सैकिया ने दावा किया कि केंद्रीय मंत्रियों सहित कम से कम 30 बड़े भाजपा नेता राजनीतिक घरानों से ताल्लुक रखते हैं। उपचुनाव में भी गठबंधन पुराने फॉर्मूला पर चुनाव लड़ रहा है। भाजपा तीन सीटों पर लड़ रही है। जबकि एक-एक सीट सहयोगी पार्टी एजीपी और यूपीपीएल को दी गई है। कांग्रेस ने सभी सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे हैं। इस पांच सीटों पर 9 लाख मतदाता वोट डालेंगे। इसके लिए 1078 पोलिंग स्टेशन बनाए गए हैं।

कर्नाटकः देवगौड़ा और बोम्मई परिवार की तीसरी पीढ़ी चुनाव मैदान में

परिवारवादी राजनीति का चेहरा कर्नाटक में खुलकर सामने आ रहा है। यहां तीन सीटों में से दो सीटों पर दो पूर्व सीएम के बेटे चुनाव लड़ रहे हैं। खास बात यह भी है कि इन दोनों पूर्व सीमए के पिता भी मुख्यमंत्री रहे हैं। इस तरह देवगौड़ा और बोम्मई परिवार की तीसरी पीढ़ी चुनाव मैदान में है। वहीं, तीसरी सीट पर कांग्रेस सांसद की पत्नी चुनाव लड़ रही हैं। पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय इस्पात मंत्री एचडी कुमारस्वामी के बेटे निखिल कुमारस्वामी चन्नपटना सीट से जेडी(एस) के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। यह सीट कुमारस्वामी के सांसद चुने जाने से खाली हुई है। वहीं, निखिल का यह तीसरा चुनाव है।

कांग्रेस ने सीपी योगेश्वर को प्रत्याशी बनाया है...

वहीं, पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के बेटे भरत बोम्मई शिग्गांव सीट से भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। यह बसवराज बोम्मई के हावेरी सांसद चुने जाने के कारण खाली हुई है। वे इस सीट से चार बार विधायक रहे हैं। हालांकि, उनसे पहले यह सीट कांग्रेस का गढ़ रही है। कांग्रेस ने इस पर यासिर अहमद खान को टिकट दिया है।

तीसरी सीट संदूर से कांग्रेस सांसद ई तुकाराम की पत्नी अन्नपूर्णा चुनाव लड़ रही हैं। यह सीट तुकाराम के बेल्लारी से सांसद चुने जाने से खाली हुई है। वे यहां से चार बार विधायक रहे हैं। वहीं, भाजपा ने अभिनेता से नेता बने राज्य भाजपा एसटी मोर्चा के अध्यक्ष बंगारू हनुमंथु को उम्मीदवार बनाया है।

गुजरातःदो सीटें खाली लेकिन सिर्फ एक सीट पर हो रहा उपचुनाव

राज्य विधानसभा की दो सीटें वाव और विसावदर खाली हैं, लेकिन चुनाव आयोग ने सिर्फ वाव सीट पर उपचुनाव की घोषणा की है। वाव सीट कांग्रेस विधायक गिनीबेन ठाकोर के बनासकांठा से सांसद चुने जाने के कारण खाली हुई है। वहीं, विसावदर सीट से आम आदमी पार्टी विधायक भूपत भायाणी के इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल होने से खाली हुई है। चूंकि 2022 विधानसभा चुनाव में उनके निर्वाचन से जुड़ी कुछ याचिकाएं गुजरात हाईकोर्ट में लंबित हैं, इसलिए इस सीट पर उपचुनाव नहीं हो रहा है। विधानसभा की 182 सीटों में से 161 पर भाजपा, 12 पर कांग्रेस, 4 पर आप, 1 पर सपा और 2 पर निर्दलीय विधायक हैं।भाजपा ने वाव सीट से स्वरूपजी ठाकोर को टिकट दिया है। वहीं, कांग्रेस ने गुलाब सिंह राजपूत को उम्मीदवार बनाया है।

मेघालयः भाजपा प्रत्याशी पर उग्रवाद और सेक्स रैकेट चलाने का आरोपी

कांग्रेस विधायक सलेंग ए संगमा के तुरा लोकसभा सीट से सांसद बनने के कारण राज्य की गाम्बेग्रे सीट खाली हुई थी। पार्टी ने इस सीट पर जिंगजांग मराक को टिकट दिया है। वहीं, भाजपा ने बर्नार्ड मारक को टिकट दिया है। पूरे घटनाक्रम पर मारक का कहना था कि मुख्यमंत्री कॉनराड संगमा के खिलाफ आवाज उठाने के कारण उन्हें फंसाया जा रहा है।

सिक्किमः दोनों सीटों पर प्रत्याशी निर्विरोध जीते,विधानसभा से विपक्ष गायब

राज्य की दोनों विधानसभा सीटों पर सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा के प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित हो चुके हैं। दरअसल, नॉमिनेशन फॉर्म की जांच के समय कुछ उम्मीदवारों के फॉर्म रद्द कर दिए गए थे। इसके बाद 25 साल सत्ता में रही सिक्किम लोकतांत्रिक मोर्चा के दोनों उम्मीदवारों ने भी अपने नाम वापस ले लिए।

विजयपुर में मतदान से पहले फायरिंग

कांग्रेस ने उठाए सवाल

भोपाल,12 नवम्बर 2024(ए)। मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले के विजयपुर विधानसभा क्षेत्र में उप-चुनाव के मतदान से पहले सोमवार की रात को कुछ लोगों ने आदिवासियों पर गोलीबारी कर दी। इस गोलीबारी में दो लोग घायल हुए है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने भाजपा पर माहौल खराब करने का आरोप लगाया है।मिली जानकारी के अनुसार सोमवार की रात को कुछ लोग मोटर साइकिल पर सवार होकर आते है और ढोढर थाना क्षेत्र के धनाचया गांव में फायरिंग करते है, जिसमें दो लोग घायल होते है। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं गांव के लोगों ने एक बंदूकधारी को पकड़ा है।

ज्ञात हो कि विजयपुर में बुधवार 13 नवंबर को मतदान होना है। चुनाव प्रचार सोमवार की शाम को थम चुका है। उसके बाद यह वारदात हुई।पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने इस घटना को लेकर कहा, उपचुनाव की वोटिंग से पहले आदिवासियों पर फायरिंग की घटना अत्यंत चिंताजनक है। इस घटना में आदिवासी समुदाय के कई लोग घायल हो गए।इस घटना से स्पष्ट होता है कि विधानसभा उपचुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी क्षेत्र का माहौल खराब करना चाहती है और मतदाताओं को डराना चाहती है।÷कमलनाथ ने कानून व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कहा, वोटिंग से ठीक पहले इस तरह की वारदात कानून व्यवस्था और चुनाव के इंतजाम पर भी बेहद गंभीर सवाल खड़े करती है। इस घटना से स्पष्ट हो गया है कि भारतीय जनता पार्टी खरीद फरोख्त की राजनीति से बाज नहीं आ रही। वह विधायक तो खरीद सकती है लेकिन जनता को नहीं खरीद सकती, इसलिए मतदाताओं के ऊपर गोलियां चलायी जा रही हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने निर्वाचन आयोग से अपील की है कि उस घटना को अत्यंत गंभीरता से लें और विजयपुर विधानसभा में निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित कराएं।

झारखंड और पश्चिम बंगाल में ईडी की बड़ी कार्रवाई

» झारखंड और पश्चिम बंगाल में कई जगहों पर ईडी की छापेमारी,

» अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ से जुड़ा है मामला

कोलकाता,12 नवम्बर 2024 (ए)। ईडी ने अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ मामले में झारखंड और पश्चिम बंगाल में कई जगहों पर छापेमारी की है। जानकारी के मुताबिक, झारखंड और पश्चिम बंगाल में 17 जगहों पर ईडी की टीम छापेमारी कर रही है। मामला झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठ से जुड़ा है। जानकारी के मुताबिक, आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि ईडी ने बांग्लादेशी नागरिकों की कथित अवैध घुसपैठ से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग की जांच के सिलसिले में मंगलवार को पश्चिम बंगाल के अलावा चुनावी राज्य झारखंड में कई स्थानों पर छापेमारी की। बता दें एजेंसी ने सितंबर में धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत झारखंड में कुछ बांग्लादेशी महिलाओं की कथित घुसपैठ और तस्करी के एक मामले की जांच के लिए केस दर्ज किया था, जिससे कथित तौर पर काले धन की सप्लाई हुई।पीएम मोदी और बीजेपी नेताओं ने राज्य सरकार पर इस तरह की घुसपैठ में मदद करने का आरोप लगाया है।

राज्य सरकार की बड़ी कार्रवाई

» वाट्सऐप ग्रूप मामले में किया गया सस्पेंड

त्रिवेन्द्रम,12 नवम्बर 2024(ए)। राज्य सरकार ने आईएएस अफसर को सस्पेंड कर दिया है। आईएएस अधिकारी के मोबाइल नंबर से बनाए गए हिंदू और मुस्लिम अफसरों के वाट्सऐप ग्रूपों पर मचे बवाल के बाद ये कार्रवाई की गयी है। केरल की विजयन सरकार ने एक्शन लिया है। इस मामले में लेफ्ट सरकार ने अनुशासन उल्लंघन के आरोप में सोमवार को आईएएस के. गोपालकृष्णन को सस्पेंड कर दिया है। इसके अलावा एक और आईएएसअधिकारी पर दूसरे मामले में एक्शन हुआ है।सीनियर आईएएस के. गोपालकृष्णन को सरकारी अधिकारियों का एक धर्म आधारित वाट्सएप ग्रुप बनाने के लिए सस्पेंड किया गया है, जबकि दूसरे अधिकारी प्रशांत को सोशल मीडिया पर एक सीनियर आईएएस अधिकारी की आलोचना करने पर कार्रवाई की गई है। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने मुख्य सचिव से मिली रिपोर्ट के आधार पर अधिकारियों को निलंबित करने का आदेश दिया।

सीजेआई बनते ही एक्शन मोड में जस्टिस संजीव खन्ना

एससी में तत्काल सुनवाई के लिए लागू की नई व्यवस्था

नई दिल्ली,12 नवम्बर 2024(ए)। सुप्रीम कोर्ट के नए मुख्य न्यायाधीश, जस्टिस संजीव खन्ना ने मंगलवार को अपने कार्यकाल के दूसरे दिन एक महत्वपूर्ण बदलाव का आदेश दिया। उन्होंने अदालत में मामलों की तत्काल सुनवाई के लिए मौखिक उल्लेख की पुरानी व्यवस्था को समाप्त कर दिया और अब से इसके लिए ई-मेल या लिखित आवेदन की प्रक्रिया को अनिवार्य कर दिया है।

अब तक, वकील सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही की शुरुआत में सीजेआई की अगुवाई वाली पीठ के सामने अपने मामलों को तत्काल सूचीबद्ध करने के लिए मौखिक रूप से उल्लेख करते थे। जस्टिस खन्ना ने इस परंपरा को बदलते हुए कहा, अब कोई मौखिक उल्लेख नहीं होगा। केवल ई-मेल या लिखित पत्र के माध्यम से ही तत्काल सुनवाई के लिए अनुरोध स्वीकार किए जाएंगे, जिसमें वकीलों को तुरंत सुनवाई की आवश्यकता का कारण स्पष्ट करना होगा। यह कदम जस्टिस खन्ना के न्यायिक सुधारों के तहत लिया गया है, जो नागरिकों के लिए न्याय तक आसान पहुंच सुनिश्चित करने और समान व्यवहार की दिशा में है।

आय से अधिक संपत्ति मामले में भरत इंदर सिंह चहल को राहत

नई दिल्ली,12 नवम्बर 2024(ए)। आय से अधिक संपत्ति मामले में पूर्व सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह के सलाहकार रहे भरत इंदर सिंह चहल को सुप्रीम कोर्ट से राहत मिली है। कोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। सप्रीम कोर्ट ने आदेश में कहा है कि याची पर दंड योग कार्रवाई न की जाए। साथ ही चहल को कहा है कि वह जांच में पूरा सहयोग दें।

संपादकीय

कांग्रेस के आरोप गंभीर

चुनाव की स्वच्छता पर कांग्रेस की ठोस राय क्या है? अगर देश में स्वच्छ चुनाव नहीं हो रहे, तो इस प्रश्न पर उसकी तैयारी क्या है? ऐसी शिकायतों का समाधान निर्वाचन आयोग या न्यायपालिका के पास जाने से तो नहीं हो सकता।जैसी अपेक्षा थी, निर्वाचन आयोग ने हरियाणा चुनाव में गड़बड़ी की कांग्रेस की शिकायत ठुकरा दी है। उसने कांग्रेस के आरोपों को बेबुनियाद,भ्रामक और तथ्यों से दूर' बताया है। आयोग सिर्फ यहीं तक रुका। उसने कांग्रेस को चेतावनी दी कि भविष्य में पार्टी ऐसे आरोप लगाने से बाज आए। आयोग ने इल्जाम लगाया है कि ऐसे सामान्य' किस्म के आरोप लगाकर कांग्रेस बिना किसी साक्ष्य के झूठे कथानक फैला रही है।आयोग ने कहा है कि ऐसी बातें मतदान या मतगणना का दिन करीब आने पर की जाती हैं, जिससे भड़काऊ माहौल बन सकता है। हरियाणा चुनाव में हार के बाद कांग्रेस ने कई निर्वाचन क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों में हेरफेर की शिकायत दर्ज कराई थी। कहा था कि कुछ क्षेत्रों में ईवीएम 99 प्रतिशत तक चार्ज्ड अवस्था में पाई गई, जो सामान्यत- संभव नहीं है। अब चूंकि आयोग ने इन शिकायतों को सिरे से खारिज कर दिया है, तो सवाल है कि कांग्रेस क्या करेगी? क्या दलील मंजूर ना होने की पूरी संभावना के बावजूद वह सुप्रीम कोर्ट जाएगी? या चुपचाप इस मसले को यहीं छोड़ अगले चुनावों में मशगूल हो जाएगी? अनुमान लगाया जा सकता है कि महाराष्ट्र या झारखंड में कहीं भी इंडिया गठबंधन हारा, तो ऐसी शिकायतें फिर से उठाई जाएंगी।आयोग की ये बात सही है कि विपक्ष अपनी हर हार के बाद ऐसा नैरेटिव खड़ा करता है। यह सच है कि विपक्ष जीत जाए, तो फिर वह जश्न मनाने में जुट जाता है। मुद्दा यह है कि चुनाव की स्वच्छता और निष्पक्षता पर कांग्रेस की ठोस राय क्या है? अगर वह मानती है कि देश में स्वच्छ चुनाव नहीं हो रहे, तो क्या इस प्रश्न पर उसने इंडिया गठबंधन के सहभागियों के साथ कोई साझा राय बनाने की कोशिश की है? ऐसी शिकायतों का समाधान निर्वाचन आयोग या न्यायपालिका में जाने से नहीं हो सकता। कांग्रेस के आरोप गंभीर किस्म के हैं। तो पहली शर्त है कि पार्टी खुद इसे गंभीरता से ले। अगर ऐसा है, तो फिर उसे व्यापक जन आंदोलन की तैयारी करनी चाहिए। वरना, इस गंभीर प्रश्न को अगंभीरता से उठाना छोड़ देना चाहिए।

भारतीय रेलवेः पहले से कहीं ज़्यादा सुरक्षित

भारतीय रेलवे में सुरक्षा पहले से कहीं अधिक बेहतर हो गई है, जिसका श्रेय पिछले दशक में की गई योजनाबद्ध पहलों को दिया जा सकता है। भारतीय रेलवे दुनिया का सबसे व्यस्त यात्री परिवहन नेटवर्क है और रेल-यात्री परिवहन में इसका विश्व में पहला स्थान है। रेलवे हर साल 1 लाख करोड़ यात्री किलोमीटर (पीकेएम) से अधिक की दूरी तय करती है और 685 करोड़ से अधिक यात्रियों को सफर कराती है। यह आँकड़ा चीन से भी काफी बड़ा है, जहाँ अपने विशाल नेटवर्क और आबादी के बावजूद लगभग 300 करोड़ यात्री ही रेल का उपयोग करते हैं।सुरक्षा में इस उल्लेखनीय सुधार का प्रमाण दुर्घटनाओं की घटती संख्या से मिलता है। जहाँ 2000-01 में 473 बड़ी रेल दुर्घटनाएँ हुई थीं, वहीं 2023-24 में यह संख्या घटकर केवल 40 रह गई है। यह गिरावट ट्रैक सुधार, मानव रहित लेवल क्रॉसिंग को हटाने, पुलों की स्थिति की नियमित निगरानी और डिजिटल तकनीक के प्रयोग से संभव हुई है। रेलवे के सुरक्षा प्रयासों को यात्री और पटरियों की लंबाई के आधार पर और भी सराहा जा सकता है। प्रतिदिन 2 करोड़ से अधिक लोग 70,000 किलोमीटर लंबे नेटवर्क पर यात्रा करते हैं। त्यौहारों के समय यह संख्या 3 करोड़ तक पहुँच जाती है। इसका मतलब है कि भारत में प्रतिदिन लगभग 2त्न लोग सुरक्षित रूप से रेल से सफर करते हैं, जबकि चीन में यह आँकड़ा 0.58त्न और अमेरिका में मात्र 0.09त्न है।भारतीय रेलवे के लिए यात्रियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह 2023-24 में

सुरक्षा से जुड़ी परियोजनाओं में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश से स्पष्ट होता है, और चालू वित्त वर्ष में इससे भी अधिक खर्च करने की योजना है। इसका उद्देश्य रेलों, पुलों, पटरियों और संकेत प्रणालियों के रखरखाव में सुधार करना है। साथ ही, ओवर- और अंडर-ब्रिज के निर्माण के माध्यम से पटरियों के निकट की सड़क सुरक्षा में भी सुधार किया जाएगा।रेलवे सुरक्षा प्रदर्शन का एक प्रमुख सूचकांक प्रति दस लाख ट्रेन किलोमीटर पर दुर्घटना की संख्या' (एपीएमटीके) है, जो 2000-01 में 0.65 से घटकर 2023-24 में 0.03 पर आ गया है। यह सुधार अत्याधुनिक तरीकों और उन्नत तकनीकों के उपयोग के कारण संभव हुआ है, जैसे कि बेहतर पटरी रखरखाव, पटरी दोषों का पता लगाने में सुधार, रेल वेल्ड विफलताओं को रोकना और मानवीय त्रुटियों को कम करना। पटरी रखरखाव में सुधार के लिए आधुनिक मशीनों की तैनाती में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जहाँ 2013-14 में केवल 700 मशीनें उपयोग में थीं, वहीं अब यह संख्या बढ़कर 1,667 हो गई है। इसके अतिरिक्त, परिसंपत्ति की विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए पूरे नेटवर्क में रेल ग्राइंडिंग का भी उपयोग किया जा रहा है। जिससे पटरियों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार आया है। इसके साथ ही,उपद्रवी गतिविधियों, पटरियों से छेड़छाड़ और पटरियों पर अवरोध वस्तुओं के कारण होने वाले जोखिमों से निपटने के लिए नियमित गश्त की जाती है।यात्रियों की सुरक्षा से आगे बढ़कर, रेलवे अब वन्यजीव और पशुधन की सुरक्षा पर भी ध्यान दे रही है। 2024-25 तक 6,433 किलोमीटर रेलवे ट्रैक के किनारे बाड़ लगाने का लक्ष्य है, जिसमें से अगस्त 2024 तक 1,396 किलोमीटर पर काम पूरा कर लिया गया है। इससे मवेशियों के साथ टकराव की घटनाओं में कमी आएगी।इन परिणामों को बनाए रखने और सुधार करने के लिए भारतीय रेलवे ने तकनीकी कार्यक्रमों और लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अपनाया है। इस पहल के तहत लोकोपायलटों को कोहरे वाले क्षेत्रों में परिचालन में सहायता के लिए जीपीएस-आधारित फॉग-पास डिवाइसेस की संख्या में वृद्धि की गई है, जो 2014-15 में केवल 90 थी और अब बढ़कर 21,742 हो गई है। लोकोपायलटों की सतर्कता बढ़ाने के लिए सभी लोकोमोटिव में सतर्कता नियंत्रण उपकरण (वीसीडी) लगाए गए हैं, जिनकी संख्या 2013-14 में 10,000 से बढ़कर अब 16,021 हो चुकी है। सुरक्षा उपायों के अंतर्गत, बड़ी पटरी (ब्रॉड-गेज) मार्गों पर स्थित 6,637 स्टेशनों में से 6,575 स्टेशनों पर पैनल इंटरलॉकिंग, रूट रिले इंटरलॉकिंग और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग जैसी उन्नत संकेत प्रणालियाँ स्थापित की गई हैं। लोकोपायलटों की दक्षता को बेहतर बनाने के लिए ड्राइविंग कौशल और प्रतिक्रिया समय में सुधार के उद्देश्य से सिम्युलेटर-आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है, जो क्षेत्रीय अनुभव का अनुकरण करता है। अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों को अग्निशमन और अग्निशामक यंत्रों के उपयोग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। 2023-24 के दौरान 6 लाख से अधिक रेलवे कर्मचारियों ने प्रारंभिक, प्रगति-उन्मुख, पुनर्- अभ्यास और विशिष्ट जैसे विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं।यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोत्तम प्राथमिकता देते हुए, एलएचबी कोचों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है, जो बेहतर दुर्घटना-रोकथाम सुविधाओं से लैस हैं। इन कोचों का डिज़ाइन इस तरह किया गया है कि यह रेल के पटरी से उतरने और यात्रियों के घायल होने की संभावना को कम करता है। टक्कर के दौरान एक-दूसरे पर चढने से बचने के लिए इन्हें इस प्रकार से बनाया गया है कि ये 160 किलोमीटर प्रति घंटे की गति पर भी सुरक्षित तरीके से परिचालित हो सकें। इसकी उत्पादन संख्या में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। 2023-24 में 4,977 एलएचबी कोच बनाए गए हैं, जो 2013-14 के 2,467 से दोगुने से भी अधिक हैं।इन सभी प्रयासों से भारतीय रेलवे पहले से कहीं अधिक सुरक्षित हो गई है। यात्री सुरक्षा और रेलवे में सुधार की दिशा में निरंतर प्रयास इसे एक सुरक्षित और विश्वसनीय परिवहन विकल्प बनाते हैं।

-ए.के.खंडेलवाल-

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाती नमो ड्रोन दीदी योजना

प्रियंका सौरभ
आर्यनगर, हिसार (हरियाणा)

समूहों में संगठित किया जाता है, जहाँ वे हवाई सर्वेक्षण, सटीक कृषि तकनीक और कीटनाशक छिड़काव सहित ड्रोन संचालन में कौशल हासिल करती हैं। ये ऑपरेशन न केवल फसल की पैदावार में सुधार करते हैं, बल्कि महिलाओं को एक स्थायी आय भी प्रदान करते हैं, लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं और उनकी वित्तीय स्वायत्तता को बढ़ाते हैं। जैसे-जैसे ये महिलाएँ ड्रोन तकनीक को अपनाती हैं, वे बढ़ते कृषि-तकनीक क्षेत्र में सक्रिय योगदानकर्ता बन जाती हैं।

नमो ड्रोन दीदी योजना, पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का एक अग्रणी प्रयास है। यह पहल महिलाओं को प्रशिक्षण प्रदान करती है, जिससे वे ड्रोन संचालित करने और स्थानीय किसानों को आवश्यक कृषि सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम हो जाती हैं। कृषि आधुनिकीकरण के साथ महिला सशक्तिकरण को जोड़कर, यह योजना सामाजिक प्रगति और आर्थिक विकास दोनों को बढ़ावा देती है। इस योजना में भाग लेने वाली महिलाओं को स्वयं सहायता

नमो ड्रोन दीदी सटीक कृषि और संसाधन अनुकूलन में योगदान दे सकती है। भारत का कृषि क्षेत्र प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों के एकीकरण के साथ परिवर्तन के शिखर पर है। ड्रोन प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित करने वाली नमो ड्रोन दीदी जैसी योजनाएँ सटीक कृषि और संसाधन अनुकूलन के माध्यम से खेती को आधुनिक बनाने की क्षमता प्रदान करती हैं, जो कृषि में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करती हैं। ड्रोन उर्वरकों और कीटनाशकों के सटीक अनुप्रयोग को सक्षम करते हैं, अपव्यय को कम करते हैं और समान वितरण सुनिश्चित करते हैं। नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत ड्रोन रासायनिक उपयोग में 30त्न तक की कमी सुनिश्चित करते हैं। ड्रोन फसलों की

वास्तविक समय की निगरानी की अनुमति देते हैं, फ़सल के स्वास्थ्य, मिट्टी की स्थिति और समय पर हस्तक्षेप के लिए प्रारंभिक रोग का पता लगाने पर डेटा प्रदान करते हैं। आंध्र प्रदेश में, ड्रोन ने कीटों के हमलों का समय पर पता लगाने के कारण फ़सल के नुक़सान को 20त्न तक कम करने में मदद की। ड्रोन फ़सल के विकास पैटर्न, मिट्टी के स्वास्थ्य और उपज के अनुमान पर सटीक डेटा प्रदान करते हैं, जिससे खेत प्रबंधन और निर्णय लेने में सुधार होता है।

वैश्विक स्तर पर, ड्रोन तकनीक ने कृषि सहित कई उद्योगों में क्रांति ला दी है। भारत में, ड्रोन में अपार संभावनाएं हैंः वे बड़े क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर सकते हैं, फसलों की निगरानी कर सकते हैं, बीमारियों या कीटों का पहले से पता लगा सकते हैं, और कीटनाशकों और उर्वरकों के सटीक उपयोग की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। यह सटीक खेती का तरीका पारंपरिक खेती के तरीकों से जुड़ी लागत और बर्बादी को कम करते हुए फसल की पैदावार को बढ़ाता है।

हालांकि, भारतीय कृषि में ड्रोन को अपनाना धीमा रहा है। उच्च लागत, सीमित जागरूकता और ग्रामीण क्षेत्रों में अपर्याप्त तकनीकी बुनियादी ढांचे ने व्यापक कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न की है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, नमो ड्रोन दीदी योजना न केवल ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देती है बल्कि ग्रामीण महिलाओं को सशक्त भी बनाती है।

महाराष्ट्र में तैनात ड्रोन ने किसानों को पैदावार का बेहतर अनुमान लगाने और उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया। ड्रोन पोषक तत्वों जैसे इनपुट के परिवर्तनीय दर अनुप्रयोग की अनुमति देते हैं, विशिष्ट क्षेत्र की ज़रूरतों के अनुसार समायोजन करते हैं, इनपुट दक्षता को अधिकतम करते हैं। उत्तर प्रदेश में, ड्रोन-सहायता प्राप्त खेती ने किसानों को मिट्टी की उर्वरता भिन्नताओं के आधार पर उर्वरकों को सटीक रूप से लागू करने में सक्षम बनाया, जिससे पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता में वृद्धि हुई। ड्रोन तकनीक में स्वचालन कीटनाशकों या उर्वरकों के छिड़काव जैसे कार्यों में मानवीय त्रुटि को कम करता है, जिससे अधिक प्रभावी संचालन होता है। मध्य प्रदेश में एक पायलट परियोजना ने कीटनाशक छिड़काव में कम त्रुटियों को दिखाया, जिससे फ़सल की उपज में 15त्न सुधार हुआ। ड्रोन मिट्टी में नमी के स्तर का आकलन करने में मदद करते हैं, जिससे सटीक सिंचाई की सुविधा मिलती है, जिससे पानी का संरक्षण होता है और यह सुनिश्चित होता है कि केवल आवश्यक क्षेत्रों में ही पानी मिले।

ड्रोन-सहायता प्राप्त सिंचाई ने गुजरात के जल-दुर्लभ क्षेत्रों में पानी के उपयोग को 15त्न तक कम कर दिया। इनपुट लागत में कमी- उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे इनपुट के सटीक उपयोग से, किसान लागत बचाते हैं, जिससे बेहतर संसाधन प्रबंधन में योगदान मिलता है। पंजाब में स्वयं सहायता समूह ने नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत ड्रोन का उपयोग करके इनपुट पर 20त्न लागत बचत की सूचना दी। ड्रोन कीटनाशकों और उर्वरकों के छिड़काव जैसे कार्यों में मैनुअल श्रम की आवश्यकता को कम करते हैं, जिससे किसानों को श्रम लागत में कटौती करने और परिचालन दक्षता में सुधार करने में मदद मिलती है। नमो ड्रोन दीदी के तहत ड्रोन सेवाओं को अपनाने के बाद हरियाणा के किसानों ने श्रम व्यय में 25त्न तक की कमी का अनुभव किया। ड्रोन तकनीक बड़े खेतों में छिड़काव और निगरानी जैसे कार्यों के लिए आवश्यक समय को काफ़ी कम कर देती है, जिससे समग्र कृषि उत्पादकता में सुधार होता है।

राजस्थान में, ड्रोन की सहायता से कीटनाशक के छिड़काव ने संचालन में लगने वाले समय को 7 दिनों से घटाकर 2 दिन कर दिया, जिससे उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। ड्रोन सटीक कीट प्रबंधन में मदद करते हैं, कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग को कम करते हैं, जिससे दीर्घकालिक मिट्टी और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य में सुधार होता है। तमिलनाडु के किसानों ने ड्रोन-सहायता प्राप्त कीट प्रबंधन प्रणालियों का उपयोग करके फ़सल की गुणवत्ता में 10 प्रतिशत सुधार की सूचना दी। नमो ड्रोन दीदी योजना खेती को आधुनिक बनाने, सटीक कृषि को बढ़ाने और इष्टतम संसाधन उपयोग सुनिश्चित करने में प्रौद्योगिकी-आधारित कृषि की अपार क्षमता को प्रदर्शित करती है। उचित कार्यान्वयन और समर्थन के साथ, ऐसी पहल भारत के कृषि क्षेत्र को स्थिरता और बढ़ी हुई उत्पादकता की ओर ले जा सकती हैं।

हालाँकि भारत कृषि में ड्रोन को एकीकृत करने वाला पहला देश नहीं है, लेकिन तकनीक के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने पर इसका ध्यान अद्वितीय है। निरंतर सरकारी समर्थन, बेहतर बुनियादी ढाँचे और किसानों की बढ़ती जागरूकता के साथ, नमो ड्रोन दीदी योजना में खेती को आधुनिक बनाने, खाद्य सुरक्षा बढ़ाने और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की क्षमता है। इन चुनौतियों का समाधान करके, यह पहल लैंगिक समानता और ग्रामीण तकनीकी उन्नति को बढ़ावा देते हुए कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देने की मांग करने वाले अन्य विकासशील देशों के लिए एक मॉडल के रूप में काम कर सकती है।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

कविता
लईका तिहार

घटती-घटना
मदन मंडावी
ढारा डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़

देश मा मनाथें बाल दिवस,
हमर छत्तीसगढ़ म लइका तिहार।
कका नेहरू ह भारत देश के,
रिहिस ओहर बड़ बुधियार।।
पहिली प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ,
लइका मनला करे बड़ पियार।
लइका मनहा जनम दिन मा,
दुकान लगाथें भेल खुशियार।।
नान्हें- नान्हें लइका मनला,
देवव गा सुग्घर के संस्कार।
इही मनहा आगु डहर चलके,
बनही देश के बड़का सरकार।।
पढ़ें-लिखें अउ आगु बन बढ़ें,
झन छिनव इनकर अधिकार।
लइकामन नइ करे इका दोषी,
सबो ल करथे बरोबर पियार।
राष्ट्र भकती हे सबले बढ़िया,
जेमा समाय हे ,देश के सार।।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

कविता
भगवान बिरसा मुंडा

घटती-घटना
मुकेश उइके मयारू
पाली,कोरबा,छत्तीसगढ़

मात-पिता के तँय हा सदा आशीष पाय।
प्रजा पालक बनके गा उलिहातु मा आय।।
जल-जंगल-जमीन के रक्षक बने महान।
आदिवासी नायक बिरसा मुंडा भगवान।।
जन-जन बर लड़े, झारखंड मा जनम धरे।
गोरा शासन ले विद्रोही आंदोलन तँय करे।।
भारत भुइयाँ के तँय गरब अउ मान बढ़ाये।
धरती दाई के सेवा कर अपन परान गँवाये।।
रहिस हे तोला आनी-बानी के औषधि ज्ञान।
जब-जब आइस रोग-राई करे तुरते निदान।।
जन चेतना जगाके तँय करे अइसन काम।
एकरे ले होइस हावय धरती आबा नाम।।
नइ सहे अंग्रेजी शासन के अतियाचार।
जीना हे सीना ताने करे एकर बहिष्कार।।
उलगुलान आंदोलन के बने तँय कर्णाधार।
शीश हमन नवावत हावन अपन बारंबार।।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

भारत में मुसलमानों का ही दबदबा क्यों ?

» क्यों तालिबान के कब्जे वाले अफगानिस्तान से वार्ता करनी पड़ रही है ?

जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 की बहाली का प्रस्ताव स्वीकृत होने के बाद क्या महाराष्ट्र झारखंड और राजस्थान, यूपी आदि के उपचुनाव में हिंदुओं के वोट इंडिया गठबंधन को मिलनी चाहिएगत 6 नवंबर को जम्मू कश्मीर विधानसभा में अनुच्छेद 370 की बहाली वाला प्रस्ताव बहुमत के साथ स्वीकृत हो गया। भले ही इस प्रस्ताव का भाजपा ने कड़ा विरोध किया हो लेकिन कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस, पीडीपी और सत्ता के लालची कुछ निर्दलीय विधायकों के समर्थन से प्रस्ताव को मंजूर कर लिया गया। इस प्रस्ताव के मंजूर होने के बाद सवाल उठता है कि क्या झारखंड और महाराष्ट्र के चुनाव और राजस्थान, यूपी आदि के उपचुनाव में इंडिया गठबंधन के उम्मीदवारों को वोट मिलने चाहिए? सब जानते हैं की अनुच्छेद 370 के प्रभावित रहते हुए ही कश्मीर घाटी से चार लाख हिंदुओं को प्रताड़ित कर

भगा दिया गया। अगस्त 2019 में जब 370 को समाप्त कर दिया गया तब जम्मू कश्मीर के हालातो में तेजी से सुधार हुआ। अब जम्मू कश्मीर में इंडिया गठबंधन में शामिल नेशनल कांफ्रेंस की सरकार है। इस दल ने अपने चुनावी वादे के अनुसार के विधानसभा में 370 की बहाली वाला स्वीकृत करवा लिया है। यानी जो अनुच्छेद हिंदुओं के खिलाफ है उसी अनुच्छेद की बहाली इंडिया गठबंधन द्वारा करवाई जा रही है। इधर विधानसभा में प्रस्ताव स्वीकृत हुआ उधर झारखंड और महाराष्ट्र के चुनाव में 370 प्रमुख मुद्दा बन गया। अब इन दोनों राज्यों के हिंदू मतदाताओं को यह तय करना है कि क्या इंडिया गठबंधन के दलों के उम्मीदवारों को वोट दिया जाए? यदि महाराष्ट्र और झारखंड में इंडिया गठबंधन के दलों की सरकार बनती है तो फिर जम्मू कश्मीर में हिंदुओं खासकर अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों की स्थिति और कमजोर हो होगी। 370 के हटने के बाद ही जम्मू कश्मीर में स एससी वर्ग खासकर वाल्मीकि समुदाय के लोगों को आरक्षण का लाभ मिलने लगा है। महाराष्ट्र और झारखंड के आदिवासी और एससी वर्ग के लिए भी चुनाव परिणाम बहुत महत्व रखते हैं। इन दोनों राज्यों के परिणाम जम्मू कश्मीर के हालातो पर भी असर डालेंगे। इसलिए इन राज्यों के हिंदू मतदाताओं को अपना वोट का उपयोग सोच विचार कर करना चाहिए। यदि इंडिया गठबंधन के दलों की जीत होती है तो फिर जम्मू कश्मीर में हिंदू और कमजोर होंगे।अफगानिस्तानरखता हूं सुनाओ से वार्ताभारत में रह रहे 25 करोड़ मुसलमान का ही दबाव है कि केंद्र सरकार को तालिबान के कब्जे वाले अफगानिस्तान से वार्ता करनी पड़ रही है। भारत के विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव जेपी सिंह ने चार और पांच नवंबर को अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में वहां के रक्षा मंत्री मोहम्मद याकूब और विदेश मंत्री आमिर खान से मुलाकात की। अफगानिस्तान के मंत्रियों ने मानवीय दृष्टिकोण से मदद का आग्रह किया। वहीं भारत की ओर से व्यापार को बढ़ाने पर विमर्श हुआ। भारत ने यह वार्ता तब की है जब अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को अभी तक भी मान्यता नहीं दी गई है। आरोप लगाता रहा है कि हमारे जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान के माध्यम से अफगानिस्तान के कट्टरपंथी युवक सक्रिय है। हालांकि पाकिस्तान में अब तालिबान के लड़के ही बम विस्फोट कर रहे हैं। भारत सहित पाकिस्तान बांग्लादेश की हालातो के मद्देनजर अफगानिस्तान से वार्ता करना राजनीतिक दृष्टि से बहुत मायने रखता है। आम तौर पर उन देशों से वार्ता नहीं की जाए जानी चाहिए जिन्हें मान्यता न मिली हो। मालूम हो कि वर्ष 2021 में जब तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा किया था तब बड़ी मुश्किल से भारतीय नागरिकों को सुरक्षित निकाला गया।

-प्रणव बजाज-

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

धूमधाम से मनाया गया देवउठनी एकादशी का पर्व

- संवाददाता -
अम्बिकापुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

जिला मुख्यालय अंबिकापुर सहित पूरे संभाग में मंगलवार को देवउठनी एकादशी पर्व श्रद्धा भाव से मनाया गया। श्रद्धालुओं ने गन्ने का मंडप बनाकर तुलसी की पूजा की। देवउठनी एकादशी के साथ मांगलिक कार्य प्रारंभ हो गया। देवउठनी एकादशी को सरगुजा में छोटी दिवाली के रूप में मनाते हैं। इस लिए बाजार में दिवाली की तरह रौनक रही। पूरे दिन गन्ना, फूल माला व अन्य पूजा के सामान खरीदने लोगों की भीड़ लगी रही। लोगों ने दिवाली की तरह की घरों की साफ-सफाई कर शाम को पूजा अर्चना की। इस दौरान लोगों ने अपने-अपने घरों के बाहर आकर्षक रंगोली भी बनाई। देवउठनी एकादशी पर दिवाली जैसा माहौल रहा। इस दौरान गन्ने की जमकर खरीदारी हुई। एक दिन पूर्व ही शहर से लगे ग्रामीण क्षेत्र के किसान गन्ना लेकर पहुंचे थे। गन्ना 40-50 रुपए जोड़ी बिका। इसके अलावा फूल, माला की भी बिक्री जमकर हुई। वहीं देवउठनी एकादशी पर गन्ने के अलावा शकरकंद का भी विशेष महत्व है। दिवाली के बाद पुनः छोटी दिवाली के रूप में देवउठनी एकादशी का इंतजार रहता है। देवउठनी एकादशी पर श्रद्धालुओं ने गन्ने का मंडप बनाकर तुलसी व शालिग्राम का विवाह करायाा। इसके बाद पूरी रात दिवाली की तरह लोगों ने आतिशबाजी की। देवउठनी एकदशी के साथ मांगलिक कार्य शुरू हो गए। मान्यता है भगवान विष्णु 17 जुलाई से देवशयनी एकादशी पर योग निंद्रा में चले जाते हैं। इस लिए मांगलिक कार्य पूरी तरह से बंद हो जाता है। देवउठनी एकादशी पर भगवान विष्णु निंद्रा से जागते हैं। इसके साथ ही शुभ मुहूत व मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाता है।

प्रेम प्रसंग में युवक की जमकर पिटाई, गला दबाते दिखे लोग

- संवाददाता -
उदयपुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

सरगुजा जिले के उदयपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत में सोशल मीडिया पर मारपीट का वीडियो जमकर वायरल हो रहा है। बताया जा रहा है कि यह वीडियो ग्राम मानपुर के लोगों ने बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है मामला प्रेम प्रसंग का बताया जा रहा है।

वीडियो तीन दिवस पूर्व का बताया जा रहा है वीडियो में एक युवक को 6-7 लोग मिलकर बेरहमी से मारपीट कर रहे हैं युवक को जमीन पर उठाकर पटक दिया गया तथा युवक का गला दबाते हुए लोगों का वीडियो बनाते हुए लोग दिख रहे हैं।

बताया जा रहा है कि ग्राम मानपुर के सोमू यादव किसी के घर में घुसा था तभी लोगों ने उसे पकड़ लिया तथा नाबालिक बच्चों ने उसे उठाकर जमीन पर पटक दिए और उसे बेरहमी से उसकी पिटाई करने लगे। नाबालिक बच्चों का पिता जब पहुंचा तो बहुत सारे लोग मिलकर उसका गला दबाने लगे तथा युवक को बुरी तरह से हाथ लात व जूते से उसकी पिटाई कर दिए वीडियो में युवक क्या गलती है गांव का आदमी हूं इस तरीके से मत मारो कहते हुए नजर आ रहा है वीडियो के बारे में जब जानकारी एकत्रित किया गया तो पता चला की जिस युवक को बहुत सारे लोग मिलकर पिटाई किए थे वह युवक तीन दिवस से गायब है और गांव और घर नहीं आया है गांव में इस मामले का सच्चाई जानना चाहा गया तो किसी ने इसके बारे में बात करने से मना कर रहे हैं बताया जा रहा है कि जिन व्यक्तियों के द्वारा युवक को मारपीट किया गया वह लोग भी गांव में अभी मौजूद नहीं है वह लोग भी फरार हैं यह वीडियो का सच्चाई क्या है यह तो जांच के बाद ही पता चल सकेगा।

संत शिरोमणि नामदेव महाराज की मनाई गई जयंती

- संवाददाता -
अम्बिकापुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

संत शिरोमणि नामदेव महाराज की 754 वीं जयंती मंगलवार को माता राजमोहिनी भवन में हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें समाज के बच्चों के माध्यम से संस्कृति कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। इसके बाद प्रसाद स्वरूप भंडारा का वितरण किया गया। कार्यक्रम में समाज के संरक्षक इंद्रजीत नामदेव, जिला अध्यक्ष गणेश नामदेव,जिला उपाध्यक्ष मोहित नामदेव, सूरज कुमार नामदेव, शैलेश नामदेव, जय सिंह नामदेव, दामोदर प्रसाद नामदेव,अजीत नामदेव, अनूप नामदेव, नीरज नामदेव, महेंद्र नामदेव, संतोष नामदेव, राजेंद्र नामदेव, राकेश नामदेव, दीपक नामदेव, रामनिवास नामदेव, शांति देवी, पूनम नामदेव, सोनी नामदेव, कुसुम नामदेव, रिमझिम नामदेव, दिया नामदेव, चांदनी नामदेव, मुन्नी देवी नामदेव सहित अन्य उपस्थित रहे।

इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए आवंटित भूमि पर बंगाली शणार्थियों ने जताया हक

- संवाददाता -
अम्बिकापुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

बंगाली शणार्थियों ने डिगमा स्थित शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए आवंटित भूमि पर दावा जताया है। बंगाली शणार्थियों ने मंगलवार को आयोजित जनदर्शन में कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर अवगत कराया है कि वर्ष 2009-10 में तत्कालीन कलेक्टर द्वारा 10.27 हेक्टेयर भूमि को इंजीनियरिंग महाविद्यालय को आवंटित कर दिया गया है। बंगाली शणार्थियों ज्ञापन सौंपकर आवंटित हुए उक्त भूमि को विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज के कब्जे से मुक्त कराने की मांग की है।

अंबिकापुर ब्लॉक के ग्राम डिगमा के ग्रामीणों ने मंगलवार को आयोजित जनदर्शन में कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर अवगत कराया है कि हमलोग बंगाली शणार्थी के रूप में ग्राम डिगमा में 16.33 हेक्टेयर भूमि पर विगत 50-60 वर्षों तक काबिज होकर लगभग 42 परिवार घर बनाकर एवं खेती बाड़ी कर जीवन यापन कर रहे हैं। तत्कालीन कलेक्टर सरगुजा द्वारा राजस्व प्रकरण क्रमांक 54/3-19/2009-10 में पारित आदेश 20 अगस्त 2010 द्वारा खसरा क्रमांक 134, 170, 223, 224, 289, 290, 291, 293 एवं 294 भूमि 10.27 हेक्टेयर भूमि को इंजीनियरिंग महाविद्यालय को आवंटित कर दिया गया है। वर्तमान में राजस्व प्रकरण क्रमांक 02/3-19/2024-25 आदेश दिनांक 15 अक्टूबर 2024 द्वारा खसरा क्रमांक 288, 287, 286, 225, 226, 228, 178 एवं 177 भूमि जिसका कुल हेक्टेयर 6.060 भूमि है। जबकि आवंटन से पूर्व से ही उक्त भूमि पर ग्रामीणों द्वारा खेती बड़ी कर काबिज कास्त थे। ग्रामीणों ने ज्ञापन में अवगत कराया है कि कलेक्टर द्वारा भूमि आवंटन से संबंधित जो आदेश पारित किया है उस आदेश में हल्का पटवारी व तहसीलदार अंबिकापुर द्वारा झूठ बोलकर एवं गुमराह करते हुए प्राचार्य विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज से सांठ- गांठ कर भ्रामक प्रतिवेदन बनाकर कलेक्टर के समक्ष प्रस्तुत किया है वह पूरी तरीके से फर्जी है। क्योंकि उक्त भूमि पर 42 परिवारों द्वारा 50-60 वर्षों से घर बनाकर व खेती कर जीवन यापन करते चले आ रहे हैं। एवं भूमि अधिग्रहण से संबंधित ऐसी कोई भी जानकारी हल्का पटवारी व राजस्व अमला द्वारा आसपास के ग्रामीणों एवं ग्राम पंचायत को कोई जानकारी नहीं है। ग्रामीणों ने ज्ञापन के माध्यमय से कलेक्टर को अवगत कराया है कि उक्त समस्त भूमि को महाविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज को आवंटन के पश्चात यहां के ग्रामीण निवासियों को कॉलेज प्रबंधन द्वारा शासन की समस्त सुविधाओं से वंचित किया जा रहा है। जिसमें की भारत सरकार व छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नल जल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना एवं प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना से वंचित रखा गया है। ऐसे कई प्रकार की योजनाओं का लाभ कॉलेज प्रबंधन द्वारा रोक दिया गया है। बल्कि उक्त भूमि पर कब्जा हटाकर चले जाने व निर्मित मकानों एवं दुकानों को जेसीबी मशीनों द्वारा ध्वस्त करने की धमकी दी जा रही है। कई मकानों को प्राचार्य इंजीनियरिंग कॉलेज द्वारा बिना किसी शासकीय आदेश के तोड़ दिया गया। ग्रामीणों ने आवंटित हुए उक्त भूमि को विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज के कब्जे से मुक्त कराने की मांग की है।

मोहरसोप में सोलर पावर प्लांट का इन्वर्टर खराब 6 महीना से पसरा अंधेरा, जंगली जानवर हाथी, बाघ से ग्रामीणों को बना है खतरा

» अंधेर नगरी चौपट राजा अब तो लाईट दिला दो साहब...

- संवाददाता -
सूरजपुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के दूर अंचल क्षेत्र चांदनी बिहारपुर के ग्राम पंचायत मोहरसोप के बनखेतापारा में सोलर पावर प्लांट का 6 महीने से इनवर्टर खराब है वही केंडा विभाग द्वारा 10 किलो वाट क्षमता का सोलर पावर प्लांट मोहरसोप में लगाया गया था जो की 6 महीने सोलर पावर प्लांट इनवर्टर खराब है पूरी तरह से लाईट ठप हो गया है

वही केडा विभाग के जिम्मेदार अधिकारी टालमटोल जवाब देते हुए बताया जाता है कि हमारे पास अभी कोई फंडिंग नहीं है इसलिए हम इनवर्टर बैटरी सहित अन्य सामग्री नए उपलब्ध नहीं कर पा रहे हैं

वही चांदनी बिहारपुर क्षेत्र के लगभग दो दर्जन गांवों में विद्युत लाइट न होने से केडा विभाग द्वारा सोलर पावर प्लांट एवं होम लाइट गांव में लगाया है लगभग 1 साल से बिहरपुर क्षेत्र के महुली कोल्हुआ खोहीर रामगढ़ उमझर बैजनपाठ लुल भून्डा तेलाईपाठ रसौकी कछवारी जूडवनीया करौटी ए खैरा नवडीया कछिया मोहरसोप बसनरा छतरग बाक केंसर बाकी पालकेवरा क्षेत्र सहित दो दर्जन गांव में लगाया गया है

वहीं कुछ दिन बाद देख रेख के रखरखाव न होने बैटरी, इनवर्टर तार पोलखंम्भा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त होकर ठप पड़ा हुआ है वहीं विभाग टालमटोल जवाब देते हुए कहते है कि हमारे पास अभी फंडिंग नहीं है इस लिए सुधार या नया समाग्री नहीं लगा सकते लालों खर्च लगेगा क्षेत्र में कई प्लांट ठप पड़े हुए हैं ग्रामीण अंधेरे में जीवन यापन करने के लिए ग्रामीण मजबूर है इधर जंगली जानवर हाथी बाघ जैसे जंगली जानवर का आना-जाना गांव लगा रहता है नजदीक में गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान का जंगल भी है जहां ग्रामीणों को रोजाना खतरा मंडरा रहा है। मोहरसोप के ग्रामीण संतलाल खैरवार ने बताया कि कई बार केड़ा विभाग के जिला अधिकारी से फोन पर बात किया जाता है तो उनके द्वारा बताया जाता है फंडिंग नहीं आ रहा है आप भटगांव विधायक मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े जी से बात करिए तभी सुधार हो पाएगा

मोहरसोप के ग्रामीण ने तत्काल जिला प्रशासन एवं सूरजपुर कलेक्टर से तत्काल सुधार करने की मांग की है।

सिंगीटाना अमेरा मोड़ के समीप ट्रेलर की चपेट में आने से ग्रामीण हुआ घायल मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर

- संवाददाता -
लखनपुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

लखनपुर थाना क्षेत्र के अंबिकापुर बिलासपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 130 स्थित सिंगीटाना अमेरा मोड़ के पास 12 नवंबर दिन मंगलवार की 4 बजे ट्रेलर की चपेट में आने से राहगीर ग्रामीण गंभीर रूप से घायल हो गया। प्राथमिक उपचार के बाद मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर रेफर किया गया है। मिली जानकारी के मुताबिक नईहर साय पिता तील साय उम्र लगभग 45 वर्ष ग्राम सिंगीटाना निवासी नेशनल हाईवे किनारे लगे दुकान में सामान ले जा रहा था इसी दौरान नईहर साय अज्ञात ट्रेलर की चपेट में आ गया जिससे उसके सिर हाथ पैर में गंभीर चोटे आई हैं स्थानीय लोगों के द्वारा डायल 112 को फोन किया गया सूचना मिलते ही डायल 112 के आरक्षक रमाशंकर चालक हर्ष मानिकपुरी मौके पर पहुंचे और घायल ग्रामीण को उपचार हेतु लखनपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर चोट होने पर नईहर साय को मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर किया गया।

सूरजपुर सीएसपी ने किया पैदल पेट्रोलिंग

» दुकानदारों को सड़क पर सामान न निकालने की दी हिदायत।

- संवाददाता -
सूरजपुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने क्षेत्र में शांती एवं सुरक्षा व्यवस्था, असामाजिक तत्वों में पुलिस का खौफ बनाए रखने तथा सुगत यातायात व्यवस्था के लिए पुलिस अधिकारियों को क्षेत्र में सक्रिय मौजूदगी बनाए रखते हुए लगातातार पैदल गश्त व पेट्रोलिंग करने के निर्देश दिए है। जिसके परिपालन में पुलिस के अधिकारी व जवानों को रात्रि में पैदल पेट्रोलिंग करते देखा जा रहा है। सोमवार, 11 नवम्बर 2024 को सीएसपी एस.एस.पैंकरा थाना सूरजपुर के पुलिस अधिकारी व जवानों के साथ मनेन्द्रगढ़ रोड़ व भैयाथान रोड़ में पैदल पेट्रोलिंग कर कहीं भी जाम की समस्या उत्पन्न ना हो, इसी मदसद से दुकानदारों को हिदायत भी दी है और नगरवासियों व व्यापारियों से संवाद स्थापित कर उन्हें दुकान का सामान सड़क पर न रखने, यातायात व्यवस्था सुगम बनाए रखने में सहयोग करने तथा दुकान के सामने सीसीटीव्ही कैमरा लगाने हेतु प्रोत्साहित किया साथ ही पैदल गश्त व पेट्रोलिंग के दौरान संदिग्धों पर पर कड़ी नजर रखी जा रहा है। सीएसपी सूरजपुर ने दुकानदारों को सड़क पर वाहन न खड़े करने की हिदायत भी दी है। एसएसपी सूरजपुर ने बताया कि पूरे जिले में लगातार पुलिस के अधिकारी व जवान नियमित रूप से पैदल गश्त व पेट्रोलिंग करेंगे।

चीन में स्पोर्ट्स सेंटर के बाहर कार ने लोगों को रौंदा, 35 की मौके पर मौत

बीजिंग, 12 नवम्बर 2024। चीन के दक्षिणी शहर झुहाई में सोमवार शाम को स्पोर्ट्स सेंटर के बाहर लोगों के समूह को कार ने टक्कर मार दी, जिससे 35 लोगों की मौत हो गई और 43 अन्य घायल हो गए। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने चीन के झुहाई शहर में कार की टक्कर में घायल हुए लोगों के इलाज के लिए हरसंभव प्रयास करने का वादा किया है।

आरोपी गिरफ्तार पुलिस ने की पुष्टि

पुलिस का कहना है कि झुहाई शहर में एक ड्राइवर द्वारा भीड़ को टक्कर मारने के बाद 35 लोगों की मौत हो गई और 43 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने सोमवार को बताया कि 62 वर्षीय चालक को हिरासत में लिया गया है। यह तुरंत स्पष्ट नहीं हो पाया कि यह हमला था या दुर्घटना। किसी कारण का उल्लेख नहीं किया गया और पुलिस ने कहा कि जांच जारी है।

सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल

शिन्हुआ की रिपोर्ट में कहा गया है कि राष्ट्रपति शी जिनफिंग ने कानून के अनुसार अपराधी को सजा देने की भी मांग की। हालांकि, आधिकारिक मीडिया में इस घटना की रिपोर्ट को व्यापक रूप से सेंसर किया गया है, लेकिन एक्स पर पोस्ट किए गए वीडियो में सड़क पर पड़े शवों और मदद के लिए चिल्लाते लोगों का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है।

अनुरूप है। पुलिस के बयान में कहा गया है कि वाहन ने सोमवार शाम को कई पैदल चल रहे यात्रियों को टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में 35 लोगों की मौत हो गई।

चीन में बढ़ रही हिंसा

राष्ट्रपति शी जिनफिंग ने घायलों के इलाज के लिए हरसंभव प्रयास करने का आदेश दिया और अपराधी को कड़ी सजा देने की मांग की। चीनी सरकार ने मामले से निपटने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए एक टीम भेजी है। चीन में कड़ी सुरक्षा और सख्त कानूनों के कारण हिंसक अपराध कम हैं। हालांकि, बड़े शहरों में चाकू से हमलों की बढ़ती रिपोर्टों ने सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा के बारे में लोगों का ध्यान आकर्षित किया है।

अक्टूबर में बीजिंग में चाकू से किए गए हमले में शहर के शीर्ष प्राथमिक विद्यालयों में से एक के बाहर पांच लोग घायल हो गए थे। एक महीने पहले शेन्जेन में अपने स्कूल के बाहर एक जापानी छात्र की चाकू मारकर हत्या कर दी गई थी। झुहाई इस सप्ताह चीन के सबसे बड़े वार्षिक एयर शो की मेजबानी कर रहा है।

नीदरलैंड में इजराइली प्रशंसकों को निशाना बनाकर हिंसा, 'ट्राम' में लगायी आग

एम्सटर्डम,12 नवम्बर 2024। नीदरलैंड की राजधानी एम्सटर्डम में सोमवार 11 नवंबर को कई लोगों ने एक 'ट्राम' में आग लगा दी। एम्सटर्डम में पिछले सप्ताह इजराइल के एक फुटबॉल क्लब के प्रशंसकों को निशाना बनाकर हिंसा की गई. इससे तनाव की स्थिति बन गई है। पुलिस के मुताबिक आग को तुरंत बुझा दिया गया। दंगा नियंत्रण अधिकारियों ने चौक को खाली करा दिया। सोशल मीडिया पर कुछ तस्वीरों में लोग ट्राम को नुकसान पहुंचाते के साथ पटाखे जलाते हुए नजर आ रहे हैं।

नीदरलैंड पुलिस ने बताया कि अशांति फैलाना किसने शुरू किया? और क्या पिछले सप्ताह इजराइली प्रशंसकों को निशाना बना के की गई हिंसा से इसका कोई संबंध है? इसको लेकर फिलहाल कुछ स्पष्ट नहीं हुआ है. मैकाबी तेल अवीव अजाक्स मैच के बाद पिछले सप्ताह गुरुवार 7 नवंबर को हुई हिंसा में घायल हुए 5 लोगों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया.इस हिंसा के संबंध में कई लोगों को पुलिस ने हिरासत में लिया.

नाबालिग बालिका से बलात्कार के आरोपी को सश्रम कारावास

- संवाददाता -

अम्बिकापुर,12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

बालिक के साथ बलात्कार करने वाले आरोपी को फास्ट ट्रेक स्पेशल कोर्ट अंबिकापुर ने दोषी ठहराते हुए 20 वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। घटना 31 मई 2022 की है। नाबालिग पीड़िता आरोपी सुखसाय कुजूर के घर बाल्टी लेने गई थी। इस दौरान आरोपी ने पीड़िता के साथ बलात्कार किया था। पीड़िता ने मामले की जानकारी परिजन को दी थी। रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल दाखिल कर दिया था और मामले की सुनवाई अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश फास्ट ट्रेक स्पेशल कोर्ट अंबिकापुर कमलेश जगदल्ला की अदालत ने चल रही थी। आरोपी सुखसाय कुजूर पिता गोनसाय 32 वर्ष निवासी समनिया को साक्ष्य और गवाहों के आधार पर आरोपित धाराओं के तहत दोषी ठहराते हुए 20 वर्ष सश्रम कारावास और अर्थ दंड से दंडित किया है। न्यायाधीश द्वारा इस मामले में पीड़िता को शासन से 5 लाख रुपए की क्षतिपूर्ति राशि दिए जाने की अनुशंसा भी की गई है।

ट्रंप को बड़ी राहत, चुनाव जीतते ही जज ने रोकी पोर्न स्टार समेत सभी आपराधिक केस में कार्यवाही

रॉयटर्स, 12 नवम्बर 2024। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव जीतकर डोनाल्ड ट्रंप एक बार फिर वाइट हाउस में वापसी कर रहे हैं। इस बीच उन्हें बड़ी राहत भी मिली। मंगलवार को न्यूयॉर्क की एक अदालत ने ट्रंप के खिलाफ पहले से तय आपराधिक मामलों पर कार्यवाही पर रोक लगा दी है। इसमें पोर्न स्टार स्टॉर्मी डेनियल्स को पैसे देकर चुप कराने का मामला भी शामिल है।

मंगलवार को सार्वजनिक किए गए एक दस्तावेज से पता चला है कि न्यूयॉर्क स्टेट के न्यायाधीश जुआन मर्चेन ने भावी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ पहले से तय आपराधिक मामले में कार्यवाही रोक दी है। जज जुआन मर्चेन को मंगलवार तक यह तय करना था कि सुप्रीम कोर्ट के जुलाई के फैसले के कारण ट्रंप की सजा रद्द की जा सकती है या नहीं। ट्रंप को 26 नवंबर को सजा सुनाए जाने की भी योजना थी।

मैनहट्टन डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी एल्विन ब्रैग के कार्यालय के अभियोजकों ने रविवार को मर्चेन को एक ईमेल भेजा, जिसमें उन्हें ट्रंप की 5 नवंबर की चुनावी जीत और जनवरी 2025 में शपथ ग्रहण के कारण कार्यवाही रोकने की अपील की थी।

अभियोजकों ने कहा, ÷लोग इस बात से सहमत हैं कि ये अभूतपूर्व परिस्थितियां हैं।÷ जज मर्चेन ने मामले की सभी कार्यवाही पर 19 नवंबर तक रोक लगा दी है।

ट्रंप पर कौन-कौन से मामले

डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति चुनाव जीत चुके हैं, लेकिन अभी यह तय नहीं हो पाया है कि उनके खिलाफ आपराधिक मामलों का क्या होगा? उनके खिलाफ पोर्न स्टार स्टार्मी डेनियल्स को गुपचुप धन देकर रिकॉर्ड में हेरा-फेरी करना, दस्तावेजों का दुरपयोग करना और चुनाव में हस्तक्षेप समेत 34 आपराधिक मामले शामिल हैं।

मैं आपसे मिलना चाहता हूं सर, इंडोनोशिया के राष्ट्रपति ने डोनाल्ड ट्रंप को मिलाया फोन...बातचीत का वीडियो हुआ वायरल

नई दिल्ली,12 नवम्बर 2024। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो इस वक्त अमेरिका दौरे पर वॉशिंगटन पहुंचे हैं। इसके बाद उन्होंने एक फोन कॉल पर डोनाल्ड ट्रंप को जीत की बधाई दी है, आज राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ उनको एक बैठक में भी शामिल होना है। इस बीच उन्होंने डोनाल्ड ट्रम्प से बात करने का अपनी कॉल का एक वीडियो भी पोस्ट किया।

कॉल पर राष्ट्रपति प्रबोवो ने डोनाल्ड ट्रंप से कहा,यदि संभव हो तो सर मैं व्यक्तिगत रूप से आपसे मिलना चाहूंगा। आप जहां भी होंगे मैं पहुंचूंगा और आपको मिलकर बधाई दूंगा। उनका ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

जब भी आप चाहें, हम ऐसा करेंगे

डोनाल्ड ट्रंप ने जवाब दिया, जब भी आप चाहें, हम ऐसा करेंगे। साथ ही उन्होंने अपनी जीत को लेकर भी खुशी जाहिर की। ट्रंप ने कहा, हमें जबरदस्त सफलता मिली। पिछले 100 सालों में ये सफलता जबरदस्त है। प्रबोवो सुबिआंतो ने आगे ट्रम्प पर चुनाव अभियान के दौरान हुए दो हत्या के प्रयासों को लेकर आश्चर्य व्यक्त किया और राहत व्यक्त की कि आप बच गए।

ट्रंप पर हमले का भी राष्ट्रपति ने किया जिक्र

इसके जवाब में ट्रंप ने कहा, हां, मैं बहुत भाग्यशाली निकला। मैं बस सही दिशा में सही जगह पर हूं, अन्यथा मैं अभी आपसे बात नहीं कर रहा होता। वहीं प्रबोवो सुबियांतो ने इससे पहले कहा था वह गुटनिरपेक्ष विदेश नीति अपनाएंगे।

जन्मदिन के दिन फांसी लगाकर विवाहिता दी जान, घटना से पूरा परिवार सदमे में

- संवाददाता -

अम्बिकापुर,12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

शहर के गांधीनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत गौरीशंकर मंदिर के पास रहने वाले शिक्षक अभिषेक दुबे की पत्नी प्रीति दुबे 28 वर्ष, फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना दिवस मृतिका का जन्मदिन था और वह अपने पति और बच्चे के साथ मंदिर भी गई थी। घर आने के बाद उसका पति निगम से आता हूं, कहकर घर से निकला। वापस लौटा तो उसकी पत्नी फांसी के फंदे पर झूल रही थी। परिजन उसे फांसी से उतारकर होलीक्रॉस अस्पताल लेकर गए, यहां जांच के बाद चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया।

जानकारी के मुताबिक मृतिका का पति अभिषेक दुबे लहपटरा स्कूल में शिक्षक के पद पर पदस्थ है, वहीं उसकी मां भी बिश्रामपुर में शिक्षिका हैं। सोमवार को अभिषेक की पत्नी प्रीति का जन्मदिन था। अपनी मां को बिश्रामपुर से छोडक़र आने के बाद वह अपनी पत्नी और डेढ़ साल के बच्चे के साथ मंदिर गया था। यहां से लौटकर आने के बाद उसकी पत्नी नाश्ता कर रही थी। इस दौरान वह किसी काम से नगर निगम से होकर आता हूं, कहकर घर से बाहर निकला। घर वापस लौटा तो दरवाजा अंदर से बंद था और मासूम बच्चे के रोने की आवाज आ रही थी। बलपूर्वक दरवाजा खोलकर वह अंदर घुसा, तो पत्नी साड़ी के सहारे फांसी का फंदा बनाकर झूल रही थी। इसकी जानकारी वह आसपास के लोगों को दिया और पत्नी के शव को फांसी के फंदे से उतारकर होलीक्रॉस अस्पताल पहुंचा, यहां जांच के बाद चिकित्सक ने महिला को मृत घोषित कर दिया। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम किया है। शव को पोस्टमार्टम के बाद स्वजन को सौंप दिया गया है। महिला ने ऐसा कदम क्यों उठाया, पुलिस इसकी जांच कर रही है।

चोरों के हौसले बुलंद ताला नहीं टूटने पर चौखट उखाड़ किया चोरी,नगदी समेत समान किया पार

- संवाददाता -

लखनपुर,12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

लखनपुर थाना क्षेत्र में कुंवरपुर स्थित जय बजरंग ट्रेडर्स में बीती रात अज्ञात चोरों ने दुकान के पीछे के दरवाजे का चौखट उखाड़ अंदर प्रवेश कर सामानों की चोरी की है। 12 नवंबर दिन मंगलवार की सुबह लगभग 10 बजे सूचना उपरांत लखनपुर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच में जुटी है। जानकारी के मुताबिक जय बजरंग ट्रेडर्स के संचालक अमन तायल सुबह लगभग 8:30 बजे दुकान खोलने पहुंचे तो देखें कि पीछे के दरवाजे के चौखट को उखाड़ अंदर प्रवेश कर अंदर लगे कैमरा ,हार्ड डिस्क ,टीवी, पाइप, पेंट 200 रुपए नगद सहित अन्य सामानों की चोरी की गई है। जय बजरंग ट्रेडर्स में या दूसरी बार अज्ञात चोरों के द्वारा चोरी की घटना को अंजाम दिया गया है यही नहीं पहले चोर ने दरवाजे का ताला तोड़ने का प्रयास किया ताला नहीं टूटने की स्थिति में लोहे के नुकीले औजार से दीवाल तोड़ चौखट उखाड़ कर घुसकर सामानों की चोरी की है।विगत माह पूर्व भी जय बजरंग ट्रेडर्स में अज्ञात चोरों के द्वारा पीछे के दरवाजे का ताला तोड़ा अंदर प्रवेश कर लगभग 180000 रुपए नगद राशि की चोरी की गई थी। पूर्व में हुए चोरी की सुराग अब तक पुलिस नहीं लगा पाए थी कि चोरों ने पुनः उसी दुकान में चोरी की घटना को अंजाम दिया है।क्षेत्र में चोरी की घटना में बढ़ने से लोगों में भय का माहौल है। अब देखने वाली बात होगी कि चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने लखनपुर पुलिस किस प्रकार का सार्थक कदम उठाती है।

नगरीय निकाय निर्वाचन 2024

निर्वाचक नामावली तैयार करने संशोधित कार्यक्रम जारी

- संवाददाता -

अम्बिकापुर, 12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा 1 अक्टूबर 2024 की अर्हता तिथि के आधार पर फोटोयुक्त निर्वाचक नामावली तैयार करने के लिए पूर्व जारी कार्यक्रम में आंशिक संशोधन करते हुए नगर पालिका निर्वाचक नामावली पुनरीक्षण कार्यक्रम जारी किया गया है। निर्वाचक नामावली तैयार करने के संशोधित कार्यक्रम अंतर्गत दावे तथा आपत्तियां 13 नवम्बर 2024 से प्राप्त की जाएगी। दावा-आपत्ति प्राप्त करने की अंतिम तिथि 20 नवम्बर 2024 अपरान्ह 3 बजे तक है। दावे-आपत्तियों के निपटारे की अंतिम तिथि 24 नवम्बर 2024, प्ररूप क-1 में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी को दावा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 27 नवम्बर 2024, प्ररूप क-1 में प्राप्त दावा का निराकरण करने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर है। दावे-आपत्तियों के निराकरण आदेश के विरूद्ध निराकरण आदेश पारित होने के 5 दिवस के भीतर अपील की जा सकती है। परिवर्धन, संशोधन, विलोपन के प्रकरणों की प्रविष्टि 5 दिसंबर 2024 तक सॉफ्टवेयर में किया जाएगा। चेकलिस्ट का निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा जांच करवाना तथा पीडीएफ मुद्रण हेतु 7 दिसंबर 2024 तक जिला कार्यालय को सौंपा जाएगा। अनुपूरक सूची का मुद्रण कराना और अनुपूरक सूची को मूल सूची के साथ 10 दिसंबर 2024 तक संलग्न किया जाएगा। निर्वाचन नामावली का अंतिम प्रकाशन 11 दिसम्बर 2024 को किया जाएगा।

14 नवम्बर से जिले के 54 उपार्जन केंद्रों में शुरू होगी धान खरीदी, किसानों में अपार उत्साह

- जिले में धान खरीदी की प्रारंभिक तैयारियां पूर्ण, किसानों से 3100 रूपए प्रति क्विंटल की दर और प्रति एकड़ 21 क्विंटल के मान से होगी धान खरीदी...
- धान खरीदी केन्द्रों में मॉनिटरिंग के लिए नोडल अधिकारियों की लगाई गई ड्यूटी...

- संवाददाता -

अम्बिकापुर,12 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)।

अंबिकापुर 12 नवंबर 2024/ राज्य में खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर पंजीकृत किसानों से धान खरीदी की शुरुआत 14 नवम्बर से होगी, जो 31 जनवरी 2025 तक चलेगी। जिले में धान खरीदी को लेकर तैयारियां जोरों-शोरों से की जा रही हैं। प्राप्त जानकारी अनुसार सरगुजा जिले में 62243 किसानों ने पंजीयन कराया है जिसका रकबा 78691 हेक्टेयर है। जिले में 54 उपार्जन केंद्रों में धान खरीदी की जानी है। इस खरीफ वर्ष में 3829 किसान नए पंजीकृत हैं। उपार्जन केंद्रों में कम्प्यूटरीकरण व्यवस्था का ट्रायल रन सोमवार को पूर्ण कर लिया गया है। गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ देश का इकलौता ऐसा राज्य है, जहां किसानों को धान का सर्वाधिक मूल्य मिल रहा है। कृषक उन्नति योजना के तहत किसानों से 3100 रूपए प्रति क्विंटल की दर और प्रति एकड़ 21 क्विंटल के मान से धान खरीदी का कार्य प्रारंभ होगा जिससे जिले के किसानों में धान खरीदी को लेकर अपार उत्साह का माहौल है। लघु एवं सीमांत किसानों का दो टोकन एवं बड़े किसानों का तीन टोकन काटा जाएगा। किसान समिति एवं मोबाइल ऐप टोकन तुंहर हाथ के माध्यम से आसानी से टोकन प्राप्त कर सकेंगे। जिले में धान खरीदी का लक्ष्य 351074 एमटी रखा गया है। कलेक्टर श्री विलास भोसकर के मार्गदर्शन धान खरीदी की तैयारियां लगभग पूर्ण कर ली गई है। खरीदी केंद्रों में धान खरीदी अवधि, निर्धारित गुणवत्ता, समर्थन मूल्य आदि की जानकारी के सम्बन्ध में बैनर एवं दीवार लेखन का कार्य किया गया है। वहीं किसानों के बैंक खातों के मिलान का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। धान खरीदी केंद्रों में किसानों की सुविधा हेतु स्थल की साफ-सफाई, पेयजल, किसानों के बैठने हेतु छायादार स्थान, त्रुटिरहित धान खरीदी हेतु कांटा-बांट अथवा इलेक्ट्रॉनिक कांटा का सत्यापन, मॉइश्चर मीटर का कैलीब्रेशन किया गया है। उपार्जन केंद्रों में कैप कवर, बारदाने की व्यवस्था, कम्प्यूटर सेट, प्रिंटर, इंटरनेट सुविधा सहित अन्य व्यवस्थाएं की गई हैं। कलेक्टर श्री भोसकर के मार्गदर्शन में 34 बिंदुओं की चेकलिस्ट के अनुसार धान खरीदी हेतु सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। उन्होंने अधिकारियों को धान खरीदी कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतने के सख्त निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने धान खरीदी केंद्रों में धान खरीदी की सतत निरागनी रखने तथा कोचियों एवं बिचौलियों से अवैध धान की खरीदी-बिक्री पर सख्त कार्रवाई करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया है। धान खरीदी केन्द्रों में मॉनिटरिंग के लिए नोडल अधिकारियों की ड्यूटी भी लगाई गई है। जिला स्तर पर धान खरीदी की सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए नोडल अपर कलेक्टर श्री सुनील नायक को बनाया गया है।

CMYK

13 नवम्बर को जिले क़ी कई खदानों के समीप होगा धरना प्रदर्शन

ज्ञापन सौंप कर लोकल क्षेत्रीय ट्रक मालिक संघ ने आवाज की बुलंद

-बागी कलम-
अनूपपुर,12 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

जिले मे संचालित कोयले क़ी खदानों मे ट्रक मालिकों को खदान मे प्रवेश से लेकर निकासी तक कई प्रकार की समस्यायों का सामना करना पड़ता हैं जिसको लेकर लोकल क्षेत्रीय ट्रक मालिक संघ द्वारा विभिन्न विषयों की मांग को लेकर जिले के कलेक्टर सहित अन्य विभागीय अधिकारियो को ज्ञापन पत्र सौंपा है। जैसा की इस बारे में सभी को ज्ञात है कि ट्रक मालिक संघ द्वारा अपने साथ होते अन्याय के विरुद्ध कई बार आवाज बुलंद करने की कोशिश की गई, जिसे लेकर ट्रांसपोटरों के साथ आपसी सहमति भी बनी किन्तु उस दिशा में कोई कार्य नहीं हुआ। इसलिए एक बार पुनः अनूपपुर जिले के लोकल ट्रक मालिक एसोसिएशन संघ ने अपनी मांगों को लेकर दिनांक 13 नवम्बर 2024 को अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन की तैयारी में जुटे

हैं। जिसे लेकर इन ट्रक मालिक एसोसिएशन संघ द्वारा जिले मे संचालित कोयले खदानों मे बहेराबांध, कोरजा, आमाड़ाड, राजनगर, ओसीएम में धरना प्रदर्शन करने की मंशा बना चुके हैं। इनकी मांगें हैं कि ट्रांसपोर्टरों एवं यूनियन के मध्य लोकल ट्रकों को पहले प्राथमिकता के आधार पर लगाया जाए। वहीं भाड़ा बिल्टी में लिखे या बिल पेमेंट बाउचर में लिखकर दिया जाए। भुगतान 10 से 15 दिवस

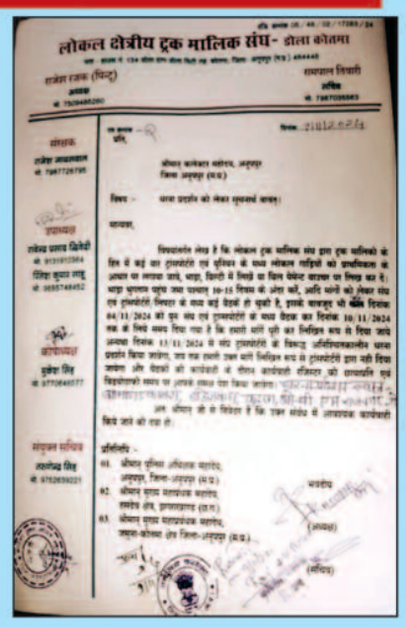

के भीतर होना चाहिए। इत्यादि मांगों को लेकर संघ व ट्रांसपोर्टरों तथा लिपटर के मध्य कई बैठकें हो चुकी हैं। इसके बावजूद 4 नवम्बर को फिर एक बार बैठक कर ट्रक मालिक एसोसिएशन संघ ने 10 नवम्बर 2024 तक का समय ट्रांसपोर्टरों को दिया है। मांगें पूर्ण ना होने पर 13 नवम्बर को अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन की बात लोकल क्षेत्रीय ट्रक मालिक एसोसिएशन संघ द्वारा की गई है।

इनका कहना है...

ट्रक मालिकों को हो रही समस्यो को देखते हुए हमारे संघ द्वारा कई बार ट्रांसपोर्टरों के साथ बैठक कर बातचीत की गई है लेकिन समस्यायों का समाधान न होने पर अब हम सभी धरना प्रदर्शन के लिए बाध्य हो चुके हैं 13 नवम्बर को हमारी टीम द्वारा जिले की कई कोयला खदानो के समीप शांति पूर्ण तरीके से धरना देंगे।

राजेश रजक
अध्यक्ष लोकल क्षेत्रीय
ट्रक मालिक संघ डोला

एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर तीनों को किया गिरफ्तार

नशीली इंजेक्शन के विक्रेता एवं खरीददार रंगे हाथों पकड़ाए

-संवाददाता-
सूरजपुर,12 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर प्रशांत कुमार ठाकुर के कड़े निर्देश के बाद पुलिस के द्वारा लगातार नशीले पदार्थ के कारोबार में लिप्त लोगों के विरूद्ध सख्ती से कार्यवाही जारी है। इसी परिप्रेक्ष्य में दिनांक 11/11/24 को थाना भटगांव पुलिस को मुखबीर से सूचना मिला कि ग्राम चुनगड़ी खोखापारा निवासी बालेश्वर उर्फ सागर राजवाड़े अपने किराना दुकान के बाहर चबुतरा में नशीली इंजेक्शन भारी मात्रा में अपने कब्जे में रखकर बिक्री कर रहा है। सूचना की तस्दीकी व कार्यवाही हेतु थाना भटगांव पुलिस मौके पर पहुंची जहां बालेश्वर उर्फ सागर राजवाड़े को नशीली इंजेक्शन

बिक्री करते पाया एवं मौके पर खरीददार श्रीदेव देवांगन एवं सोनू उर्फ मनई के द्वारा उपयोग करते पाया गया। पुलिस ने बालेश्वर के कब्जे से 27 नग नशीली इंजेक्शन व 2 सिरिंग जप्त किया है जिसकी बाजारू कीमत करीब 20 हजार रूपये है। मामले में नशीली इंजेक्शन व सिरिंज जप्त कर धारा 21(सी), 27 एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर आरोपी बालेश्वर उर्फ सागर राजवाड़े पिता स्व. रामकया राजवाड़े उम्र 25 वर्ष ग्राम चुनगड़ी, थाना भटगांव, श्रीदेव देवांगन पिता शिवा देवांगन उम्र 23 वर्ष ग्राम नया करकोली, थाना भटगांव व सोनू उर्फ मनई राजवाड़े पिता हरभजन राजवाड़े उम्र 30 वर्ष ग्राम तेलगांव, थाना भटगांव को गिरफ्तार किया है। मुख्य आरोपी बालेश्वर उर्फ सागर राजवाड़े पूर्व में भी एनडीपीएस एक्ट और लूट के मामले में चालान हो चुका है इसी प्रकार सोनू उर्फ मनई चोरी के मामले में चालान हो चुका है। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी भटगांव जे.एस.कंवर, एसआई सरफराज फिरदौसी, एएसआई संजय गोस्वामी, आरक्षक राधेश्याम साहू, दिनेश ठाकुर, ताराचंद यादव, मोहम्मद नौशाद अहमद व संतोष जायसवाल सक्रिय रहे।

जब तक रहेगा दम, तब तक गोवंश की सेवा करेंगे हमःशिव मारुति युवा संगठन

संगठन के सदस्यों द्वारा 3 घंटे का रेस्क्यू कर गाय को निकाला सेप्टी टैंक से बाहर

-बागी कलम-
अनूपपुर,12 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

कहते हैं की मेहनत करने वालों की हार नहीं होती उसी क्रम में निरंतर शिव मारुति युवा संगठन सामतपुर हर बेसहारा जीवो को सहारा देती चली आ रही है। अब तक यह संगठन के गौ सेवको द्वारा लगभग 300 से ज्यादा गौवंशो का उपचार कर के उन्हें पुनः जन्म दिया गया है। शिव मारुति युवा संगठन द्वारा संचालित गौ सेवा सदन में सड़क दुर्घटना में घायल, बीमारग्रस्त, निराश्रित गौ वंशों का निःशुल्क उपचार किया जा रहा है। गौ वंशो के

लिए न्याय की लड़ाई लड़ रहे है और हर वर्ष संगठन के गौ सेवको द्वारा रेडियम बेल्ट अभियान सहित गर्मी के दिनों में हर घर नाद आईये करे शंखनाद अभियान भी चलाया जाता है। हाल ही में सुबह 7 बजे सूचना मिली कि फॉरेस्ट कालोनी में एक गौ माता मलवा से भरे सेप्टी टैंक में 4 दिनों से गिरी पड़ी थी। जिस सूचना के आधार पर शिव मारुति युवा संगठन सामतपुर के सदस्यों द्वारा तत्काल मौके पर पहुंच कर कार्यवाही प्रारंभ की गई। संगठन के सभी सदस्य एवं नगर पालिका अनूपपुर के सफाई कर्मचारियों के विशेष सहयोग और काफी मेहनत करने के बाद जेसीबी मशीन के द्वारा गौ माता को सही सलामत बाहर निकाला गया और यह 3 घंटे का विशेष रेस्क्यू किया गया। इस कड़ी मेहनत और सफलतापूर्वक कार्य के लिए संगठन के अध्यक्ष बृजेश राठौर ने बताया कि शिव मारुति युवा संगठन का यह संकल्प है कि जब तक रहेगा दम तब तक गोवंश की सेवा करते रहेंगे हम। इसी उद्देश्य को सफल करने के साथ अपनी टीम शिव मारुति युवा संगठन सामतपुर के सदस्यों और सफाई कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

चिरमिरी बिलासपुर कोरबा सड़क रिपेयरिंग में हो रही है सिर्फ और सिर्फ खानापूर्ति

-संवाददाता-
खड़गवां,12 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

विकासखंड खड़गवां मुख्यालय से गुजरने वाली चिरमिरी बिलासपुर कोरबा मुख्य मार्ग की पैच रिपेयरिंग का काम सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है लोक निर्माण विभाग मनेंद्रगढ़ ने चिरमिरी बिलासपुर कोरबा सड़क पैच रिपेयरिंग कर डामरीकरण करने का ठेका ठेकेदार के द्वारा लिया गया है जिसके द्वारा बोडेमूडा रतनपुर में सड़क पैच रिपेयरिंग एवं डामरीकरण का कार्य किया जा रहा है सड़क पैच रिपेयरिंग जिन मापदंडों के अनुसार किया जाना है वह ना करते हुए

ठेकेदार मनमाने तरीके से सड़क के बिना पैच के गड्ढों को कटिंग कर उस टूटी सड़क में सड़क निर्माण सामग्री को डालकर रोलर से रोलिंग कर के बाद इसलशन डालकर सड़क के पैच रिपेयरिंग एवं डामरीकरण का निर्माण कार्य करना है जो नहीं किया जा रहा है और किसी प्रकार की कोई निर्माण सामग्री का इस्तेमाल नहीं किया गया है और सड़क पैच रिपेयरिंग किया जा रहा है जो इमलशन में सिर्फ पानी मिलकर सड़क में पैच रिपेयरिंग एवं डामरीकरण का कार्य किया जा रहा है सड़क निर्माण बिना सफाई के कराया जा रहा है ग्रामीणों ने सड़क पैच रिपेयरिंग एवं डामरीकरण के गुणवत्ता विहीन और घटिया निर्माण करने का आरोप लगाया है। जिले के खड़गवां विकासखंड के मुख्य मार्ग से छत्तीसगढ़ के जनप्रतिनिधि अधिकारी मंत्री सांसद सभी का इस मुख्य सड़क से आना-जाना लगा रहता है उसके बाद भी घटिया और गुणवत्ता विहीन सड़क पैच रिपेयरिंग एवं डामरीकरण निर्माण कार्य कराया जा रहा है वहीं विभागीय अधिकारी इस तरफ ध्यान देना मुनासिब नहीं समझ रहे हैं जिससे ग्रामीणों में निर्माण को लेकर जन आक्रोश भी पनप रहा है राजधानी को जोड़ने वाली सड़क में गुणवत्ता विहीन निर्माण कार्य का होना एवं पैच रिपेयरिंग एवं डामरीकरण के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति किया जाना लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के द्वारा ठेकेदार को खुला संरक्षण देखकर घटिया और गुणवत्ता विहीन निर्माण कार्य को कराया जा रहा है? इस संबंध में लोक निर्माण विभाग के ई से जानकारी चाहने कि कोशिश कि तो उन्होंने ने फोन ही नहीं उठाये।

नाम परिवर्तन सूचना

मैं पुराना नाम दीपवंदना तिर्की पिता अभय तिर्की अपना पुराना नाम को बदलकर दीपांचल तिर्की निवासी मकान कमांक-0393 वार्ड क्रमांक 18 चंदरपुर जिला सूरजपुर छ0ग0 पिन नं0-497229 रख ली हूँ। अतः अब मुझे भविष्य में समस्त शासकीय / अर्धशासकीय व अन्य दस्तावेजों में नया नाम दीपांचल तिर्की आ0 अभय तिर्की से जाना एव पहचाना जाए।

शपथकर्ता
दीपाचल तिर्की पिता अभय तिर्की
चन्दरपुर सूरजपुर जिला सूरजपुर
(छ0ग0)

कटघोरा में शिक्षक मोर्चा ने मोदी की गारंटी लागू करने मुख्यमंत्री के नाम एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

-संवाददाता-
कोरबा,12 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ शिक्षक मोर्चा के बैनर तले कोरबा जिला में कटघोरा के शिक्षकों ने अपनी पांच सूत्रीय मांगों को लेकर एसडीएम कटघोरा और बीईओ कटघोरा के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौपे। कटघोरा ब्लॉक संयोजक नंद किशोर साहू ने बताया कि शिक्षक एलबी संवर्ग पूरे प्रदेश में वेतन विसंगति और पूर्व सेवा गणना सहित अन्य मांगों को लेकर आंदोलन का शंखनाद कर चुके हैं इसकी अगली कड़ी में आज छत्तीसगढ़ शिक्षक संघर्ष मोर्चा के प्रदेश संयोजक संजय शर्मा, वीरेंद्र दुबे, मनीष मिश्रा, विकास राजपूत के निर्देश में मनोज चौबे,प्रमोद राजपूत, भवदीप दुबे, विनोद सांडे और देवव्रत शर्मा के मार्गदर्शन में तथा नन्द किशोर साहू व जयप्रकाश झा के नेतृत्व में 11 नवम्बर को मोदी की गारंटी लागू करने कटघोरा में सैकड़ों शिक्षक एल बी अपना अधिकार मांगने तथा पांच सूत्रीय मांगों को लेकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौपें।अश्वनी जायसवाल और महेंद्र राठौड़ ने बताया कि जिन मांगो को लेकर एल बी संवर्ग ज्ञापन सौपें उसमें मोदी जी के गारंटी के तहत सहायक शिक्षकों के वेतन विसंगति दूर कर समस्त एल बी संवर्ग को क्रमोन्नत/समयमान वेतनमान प्रदान किया जावे। समतुल्य वेतनमान (पुनरीक्षित वेतनमान) में सही वेतन का निर्धारण कर 1.86 के गुणांक पर वेतन निर्धारण किया जावे। पूर्व सेवा अवधि की गणना करते हुए समस्त शिक्षक एलबी संवर्ग के पुरानी पेंशन को निर्धारित करें एवं भारत सरकार द्वारा 2 सितंबर 2008 को जारी आदेश के समान 33 वर्ष में पूर्ण पेंशन के स्थान पर 20

वर्ष में पूर्ण पेंशन का प्रावधान किया जावे।माननीय उच्च न्यायालय बिलासपुर द्वारा याचिका क्रमांक ङ्क/261/2024 में डबल बैंच द्वारा पारित निर्णय दिनांक 28/02/2024 के तहत सभी पात्र एल बी संवर्ग के शिक्षको के लिए क्रमोन्नति/समयमान का विभागीय आदेश किया जावे। शिक्षक व कर्मचारियों को केंद्र के समान 01 जुलाई 2024 से 3 प्रतिशत महंगाई भत्ता दिया जाये तथा जुलाई 2019 से देय तिथि पर महंगाई भत्ते के एरियर राशि का समायोजन जीपीएफ/सीजीपीएफ खाता में किया जाए। महेंद्र निषाद और अनिल भट्टपहरे ने बताया कि शिक्षक मोर्चा द्वारा आगामी 2 माह का चरणबद्ध आंदोलन ÷पूर्व सेवा गणना मिशन÷ अभियान में तय किया गया है, जिसके तहत -14 अक्टूबर को सभी जिला मुख्यालय में ज्ञापन दिया गया। 24 अक्तूबर को सभी जिला मुख्यालय में धरना, रैली प्रदर्शन कर मांग किया गया। 01 नवंबर राज्य स्थापना के दिवस प्रदेश भर के शिक्षक पूर्व सेवा गणना दीप जलाकर अधिकार मांग किया गया।और 11 नवंबर को कटघोरा विकास खंड में मुख्यमंत्री जी के नाम एस.डी.एम. साहब कटघोरा व बी.ई.ओ. साहब कटघोरा को ज्ञापन दिया गया। इसके अगली कड़ी में 12 नवंबर से 24 नवंबर के बीच प्रदेश के मुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद, विधायक को मांग पत्र सौपा जाएगा। 25 नवम्बर 2024 को इंद्रावती से महानदी भवन मुख्यालय तक पैदल मार्च कर मांग पत्र देंगे। आज के ज्ञापन सौंपने वाले में मुख्य रूप से नन्द किशोर साहू, जयप्रकाश झा, अश्वनी कुमार जायसवाल, महेंद्र निषाद, माया देवी खत्री, वर्षा शर्मा, वीणा महंत, अनिल भट्टपहरे, शंकरलाल भार्गव, शिव कुमार साहू, चंद्रिका पांडे, ललित पटेल, उमाशंकर यादव, महेंद्र राठौड़, प्रबल तिवारी, धीरेंद्र कुमार प्रजापति, हरिशंकर पाटले, तारकेश्वर कंवर, महेंद्र यादव, शिवधन साहू, नवल कुमार जोशी, भवानी गोपाल, लक्ष्मीशरण कोसले, पुनीराम साहू, घनश्याम नेटी, लोचन आर्मो, बोधराम कंवर, व रामकुमार कंवर उपस्थित रहे।

न्यायालय नायब तहसीलदार -2 अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,(छ0ग0)

रा.प्र.क्र.202407021700040/ /अ-6 /2023-24

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका सुमन कुमारी पत्नी अंशुमन कुशवाहा, जाति कुशवाहा, निवासी ग्राम चांदनी चौक मायापुर अम्बिकापुर, तहसील अम्बिकापुर, जिला सरगुजा छ0ग0 द्वारा ग्राम अजिरमा स्थित भूमि खसरा नंबर 934/2, 945/2 रकबा क्रमशः 0.108, 0.093 हे0 मेसे रकबा क्रमशः 0.004, 0.030 हे0 भूमि को विक्रता श्रीमती गीतिका सिंहदेव पुत्री स्व0 शशीभूषण सिंहदेव पत्नी संजीव कामरा, जाति क्षत्रिय निवासी किरण बंग्लोव प्लाट नम्बर 118 चारकोप सेक्टर 03 कांदिवली मुम्बइ- महाराष्ट्र से दिनांक 19/06/2024 को पंजीबद्ध विक्रय पत्र के माध्यम से क्रय किया गया है।आवेदिका द्वारा वक्त पंजीबद्ध विक्रय पत्र के आधार पर नामांतरण बावत आवेदन पेश किया गया गया है।

उक्त संबंध में किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 29/11/2024 से पूर्व न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 12/11/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील — नायब तहसीलदार ,अंबिकापुर-02

न्यायालय नजूल अधिकारी, अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा

रा.प्र.क्र...../ब-121/2023-24

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि आवेदिका जुगो देवी राजवाड़े पत्नी स्व0 श्याम साय राजवाड़े, विशुननाथ राजवाड़े, महेश राजवाड़े, आ0 श्री आ0 स्व0 श्याम साय राजवाड़े, रितु राजवाड़े, वैशव राजवाड़े एवं वीर कुमार आ0 स्व0 गणेश कुमार राजवाड़े निवासी डी0सी0 रोड एवं ग्राम सरईटिकरा तहसील अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा,छ0ग0 के द्वारा अपने संयुक्त स्वामित्व की मोहल्ला सिचाई कॉलोनी नगर अम्बिकापुर स्थित प्लाट नम्बर 2027/79 रकबा 800 वर्गमीटर भूमि से भू-तल पर रकबा 45.52 वर्गमीटर, प्रथम तल पर रकबा 45.52 वर्गमीटर पर आवासीय भवन निर्माण कराने की अनापत्ति प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्र मेन्टेनेन्स खसरा एवं प्रस्तावित ब्लूप्रिंट नक्शा की प्रति सहित आवेदन पत्र भवन निर्माण शाखा में प्रस्तुत किया है जो जांच प्रतिवेदनार्थ इस न्यायालय को प्राप्त हुआ है।

उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा-आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 27/11/2024 तक न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 08/11/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील — नजूल अधिकारी ,अंबिकापुर

न्यायालय तहसीलदार अंबिकापुर के न्यायालय में मामला क्रमांकः. 202408020700012

विषयः-अ-27 मामले की श्रेणीः- राजस्व सन्ः-2023-24

मायापुर (प.ह.नं.00014 हे0)

पक्षकारों का विवरणः-

आवेदक पक्षकार-नन्दलाल उमेश सुरेश मंजू, मु.पार्वती, आराध्य,ना बा प्रिया ना बा, अरूषी आ0 सुरेन्द्र मु गायत्री,

अनावेदक पक्षकार-ना.बा प्रिया, ना.बा आरूषी आ0 सुरेन्द्र मु गायत्री, आराध्य, नन्दलाल,उमेश सुरेश,मंजू,मु.पार्वती

ईश्तहार

आवेदक मु0 पार्वती पत्नी स्व0 नंदकुमार व अन्य, निवासी मायापुर, तहसील अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा छ0ग0 के द्वारा ग्राम मायापुर स्थित खसरा नंबर 68, 71, 115 रकबा क्रमशः 8/62, 0.308, 0.506 हे0 भूमि को उभयपक्ष के मध्य में बटवारा किये जाने आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 14/11/2024 के पूर्व न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। समय सीमा के बाद प्राप्त दावाआपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 04/11/2024 को जारी किया जाता हैं।

सील — तहसीलदार अंबिकापुर,सरगुजा

न्यायालय नजूल अधिकारी, अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा

रा.प्र.क्र...../अ-20(3)/2024-25

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि आवेदिका श्रीमती वंदना अग्रवाल पत्नी सचिन अग्रवाल जाति अग्रवाल निवासी खरसिया रोड अम्बिकापुर थाना व तहसील अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा के द्वारा अपने स्वामित्व की मोहल्ला बाबूपारा (मौलबी बांध) नगर अम्बिकापुर, शीट नम्बर-9 स्थित नजूल भूमि प्लाट नम्बर 3467/4866/194 रकबा 190.8 वर्गफीट भूमि को अनावेदक पुनीत कुमार अग्रवाल आ0 प्रदीप कुमार अग्रवाल जाति अग्रवाल निवासी वार्ड नम्बर-7 बस स्टैड के पास रामानुजगंज तहसील रामानुजगंज जिला बलरामपुर छ0ग0 के पास विक्रय करने की अनापत्ति प्रमाण पत्र हेतु मेन्टनेन्स खसरा, शपथ पत्र की छायाप्रति सहित आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

उक्त भू-खण्ड के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा-आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 25/11/2024 तक न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 21/10/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील — नजूल अधिकारी ,अंबिकापुर

CMYK

राष्ट्रीय पशु बाघ की मौत पर क्या हो गई लीपापोती ?

वायरल हुए फोटो में नाखून व आंख दिख रहे निकले हुए वहीं वन विभाग की विज्ञप्ति आई तो सभी कुछ था सही सलामत, अब सही क्या है?

क्या राष्ट्रीय पशु के मौत के बाद उसके शव के जलते ही सारे सबूत खत्म... लापरवाही वाले अधिकारी को कार्यवाही से बचाने का खेला हुआ पूरा

बाघ के पीएम के समय मीडिया को वहां पहुंचने से रोका गया पर अंतिम संस्कार में मीडिया को बुलाकर वीडियोग्राफी कराई गई क्यों?

जब राष्ट्रीय पशु के मौत पर लापरवाही की आ रही थी बू, फिर भी आनन-फानन में हुआ अंतिम संस्कार क्यों?

लगातार राष्ट्रीय पशु का कोरिया वन मंडल में मौत होना विभागीय लापरवाही नहीं?

बाघ के मौत मामले में उच्च अधिकारियों की लीपापोती पर उठ रहे सवाल ?

विज्ञप्ति जारी कर शव का अंतिम संस्कार कर क्या कार्यवाही से बचना चाह रहे थे अधिकारी?

छोटे कर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही करके क्या बड़े अधिकारियों को बचाया जा रहा,वनपाल एवं वनरक्षक हुआ निलंबित?

me 11:41 AM
to mefcc, secymfcc, bcc: addi...

प्रति,

श्रीमान भूपेंद्र यादव जी
केंद्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मन्त्री
(भारत सरकार)

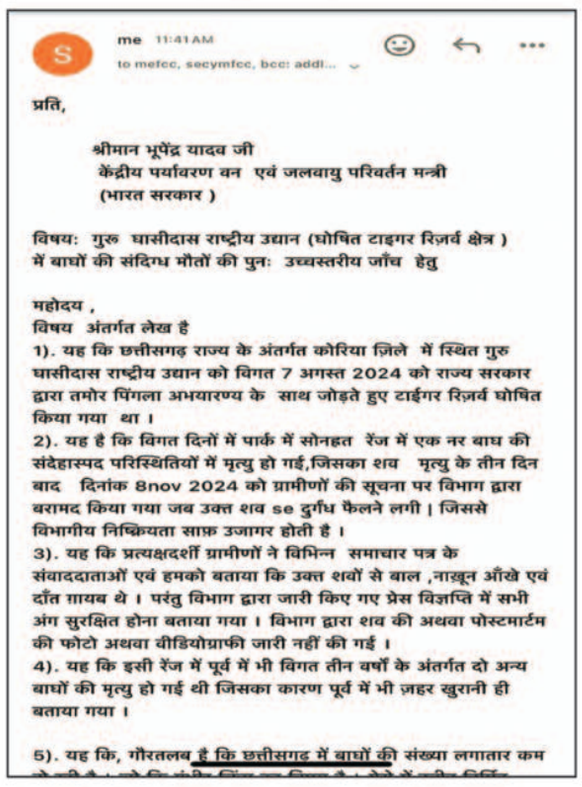

विषय: गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान (घोषित टाइगर रिज़र्व क्षेत्र) में बाघों की संदिग्ध मौतों की पुनः उच्चस्तरीय जाँच हेतु

महोदय ,
विषय अंतर्गत लेख है
1). यह कि छत्तीसगढ़ राज्य के अंतर्गत कोरिया ज़िले में स्थित गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान को विगत 7 अगस्त 2024 को राज्य सरकार द्वारा तमोर पिंगला अभयारण्य के साथ जोड़ते हुए टाईगर रिज़र्व घोषित किया गया था ।
2). यह है कि विगत दिनों में पार्क में सोनहत रेंज में एक नर बाघ की संदेहास्पद परिस्थितियों में मृत्यु हो गई,जिसका शव मृत्यु के तीन दिन बाद दिनांक 8nov 2024 को ग्रामीणों की सूचना पर विभाग द्वारा बरामद किया गया जब उक्त शव se दुर्गंध फैलने लगी | जिससे विभागीय निष्क्रियता साफ़ उजागर होती है ।
3). यह कि प्रत्यक्षदर्शी ग्रामीणों ने विभिन्न समाचार पत्र के संवाददाताओं एवं हमको बताया कि उक्त शवों से बाल ,नाख़ून आँखे एवं दाँत ग़ायब थे । परंतु विभाग द्वारा जारी किए गए प्रेस विज्ञप्ति में सभी अंग सुरक्षित होना बताया गया । विभाग द्वारा शव की अथवा पोस्टमार्टम की फोटो अथवा वीडियोग्राफी जारी नहीं की गई ।
4). यह कि इसी रेंज में पूर्व में भी विगत तीन वर्षों के अंतर्गत दो अन्य बाघों की मृत्यु हो गई थी जिसका कारण पूर्व में भी ज़हर खुरानी ही बताया गया ।

5). यह कि, गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ में बाघों की संख्या लगातार कम हो रही है । जो कि गंभीर चिंता का विषय है । ऐसे में नवीन निर्मित टाईगर रिजर्व में बाघों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए इस प्रकार की घटनाओं पर अंकुश लगाया जाना चाहिए । एवं पूर्व में हुई घटनाओं की दोबारा उच्च स्तरीय जाँच कर दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए,साथ ही ऐसे लापरवाह अधिकारियों कर्मचारियों की भी जवाबदेही सुनिश्चित कर कार्यवाही की चाहिये जिनकी लापरवाही ,उदासीनता एवं कागजी खानापूर्ति के कारण ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था का निर्माण हो रहा है जिसका भुगतान वन्य जीवों एवं प्राकृतिक संसाधनों को चुकाना पड़ रहा है ।
अतएव आपकी ओर सादर प्रेषित ।

संलग्न: 1). घटना से संबधित प्रमुख अखबारों की रिपोर्ट ।
2). विभाग द्वारा जारी बयान

प्रतिलिपि: 1).सुश्री लीना टंडन (मुख्य सचिव)
केंद्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
2). श्री केदार कश्यप (मान. मंत्री)
छत्तीसगढ़ वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
3). वाईल्ड लाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो (नई दिल्ली)
4).कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक छ.ग. (रायपुर)

भवदीय
शारदा प्रसाद गुप्ता
लोकसभा सोशल मीडिया संयोजक (कोरबा)
पूर्व जिला महामंत्री (भाजपा युवा मोर्चा/ cg चेंबर आफ़ कॉमर्स युवा)
बैकुंठपुर (जिला कोरिया)
छत्तीसगढ़
मो. 8871751175

-रवि सिंह-
कोरिया,12 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

टाइगर यानी कि बाघ सभी को पता है कि राष्ट्रीय पशु है, राष्ट्रीय पशु होने की वजह से टाइगर को बचाना और उसकी निगरानी और भी बड़ी जिम्मेदारी वन विभाग की हो जाती है, पर क्या अपने ही राष्ट्रीय पशु को बचाने में विभाग पूरी तरह असफल है? टाइगर की मौत सिर्फ जहर खाने से हो गई, यह कहकर क्या वन विभाग बच सकता है? सवाल तो कई खड़े हैं कि आखिर कोरिया वन मंडल बाघों के लिए असुरक्षित वन मंडल तो नहीं? क्योंकि इस क्षेत्र में बाघ की मरने की घटनाएं बढ़ गई है, दो बार बाघ के मरने में जहर की बात सामने आई है पर सवाल यह है कि आखिर बाघ तक जहर कैसे पहुंच रहा? क्या कोई बड़ा गिरोह बाघ को मार कर उसके कीमती अवशेष ले जाकर पैसे कमाने में लगे हुए हैं? और यदि ऐसा हो भी रहा है तो फिर वन विभाग बाघ को लेकर क्या निगरानी कर रहा? और बाघ की सुरक्षा कैसे दे रहा है की बाघ सुरक्षित नहीं है? जबकि यह कहा जा रहा है कि जंगल में तमाम तरह के बाघ को ट्रैक करने के लिए उपकरण लगाए गए हैं फिर भी बाघ की मौत व हत्या हो जाना कहीं ना कहीं विभाग की

लापरवाही को बताता है। कोरिया जिले में कुछ दिन पहले बाघ की मौत को लेकर कई सवाल खड़े हो चुके हैं, पहला सवाल तो यह है कि जब बाघ के मौत में भी विभाग की संलिप्तता व लापरवाही देखी जा रही थी वैसी स्थिति में बाघ का पीएम किसी बाहर की टीम से करना था, ताकि वास्तविक स्थिति का पता चल सके पर ऐसा होता दिख नहीं रहा है, यहां तक की बाघ के शव को जलाने में काफी हड़बड़ी दिखाई गई। क्या बाघ के साथ सारे सबूत भी जल गए?

क्या वन विभाग केवल निर्माण विभाग बनकर रह गया है,क्या अधिकारियों कर्मचारियों को वन सहित वन्य जीवों से कोई सरोकार नहीं?

बाघ की मौत जहर से होने के बाद यह भी स्पष्ट हुआ कि वन विभाग को वन्य जीवों सहित वन से कोई लेना देना नहीं है वहीं अब यह भी सवाल उठता है कि वन विभाग केवल निर्माण एजेंसी बनकर रह गया है। वन विभाग के अधिकारी और कर्मचारी निर्माण कार्यों के अलावा अपने मूल कर्तव्य का त्याग कर चुके हैं यह कहना गलत नहीं होगा। वन विभाग के अधिकारी और कर्मचारी जिस लगन से निर्माण कार्य का संपादन करते हैं उतनी ही लगन से वन्य जीवों सहित वन की रक्षा करते यह स्थिति नहीं आती न बाघ मरते न जंगल कटते यह लोगों का कहना है।आज अधिकारियों की बेहिसाब संपत्ति वन्य जीवों वनों की तिलांजलि करके प्राप्त की गई है यह लोग कहने लगे हैं।

जब टाइगर के शव का हो गया अंतिम संस्कार फिर कैसे होगी उच्च स्तरीय जांच?

कोरिया के युवा भाजपा नेता शारदा गुप्ता ने वन मंत्री को पत्र लिखकर इस मामले में उच्च स्तरीय जांच करने की मांग की है यह मांग जिले से कई लोगों के द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से भी की जा रही है, पर सवाल यह उठ रहा है कि जब बाघ का कुछ बचा ही नहीं क्योंकि अंतिम संस्कार हो चुका है तब फिर जांच क्या चीज का होगा? अब तो जो पीएम रिपोर्ट दे दिया गया है उसी को मानना पड़ेगा और जो वन विभाग के लोग कहेंगे वही सुनना होगा? क्या उच्च स्तरीय जांच ना हो इसीलिए आनन-फानन में शव को दफनाने के जगह जलाकर अंतिम संस्कार किया गया? यदि यही घटना किसी व्यक्ति के साथ होती तो उसके शव को दफनाया जाता ताकि कभी भी दोबारा पीएम करना हो या फिर किसी और चीजों की जांच ना हो पाई हो तो उसके शव को निकाल कर दोबारा पीएम किया जाता था पर, क्या ऐसा ही राष्ट्रीय पशु के मौत पर नहीं किया जा सकता था या फिर सबूत जलकर खत्म हो जाए नष्ट हो जाए इसलिए आनन-फानन में शव का अंतिम संस्कार किया गया?

छोटे कर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही, वनपाल एवं वनरक्षक हुआ निलंबित

इस संबंध में स्पष्टीकरण का प्रतिउत्तर पत्र प्राप्ति के 03 दिवस के भीतर वन संरक्षक कोरिया वन मण्डल बैकुण्ठपुर के कार्यालय को प्रेषित करने कहा है प्रतिउत्तर समय पर प्राप्त नहीं होने और संतोषजनक नहीं होने पर एक पक्षीय कार्यवाही की जाएगी। वहीं कोरिया वनमण्डल बैकुण्ठपुर अंतर्गत परिक्षेत्र सोनहत के रामगढ़, सर्किल, बीट गरनई, क से लगे हुये असीमांकित वनभूमि कुदरी में खनखापेड नाला के किनारे 01 टाईगर मृत्यु (उम्र लगभग 4-5 वर्ष) की सूचना प्राप्त हुई है, जिससे प्रतीत होता है कि श्री रमन प्रताप सिंह, वनपाल परिक्षेत्र रामगढ़ एवं श्री पिताम्बर लाल राजवाड़ें, वनरक्षक बीट प्रभारी गरनई के द्वारा वनक्षेत्र में बाघ होने के बावजूद भी नियमित रूप से वनक्षेत्र का भ्रमण नहीं किया गया, जो शासकीय कर्तव्यों के प्रति इनकी घोर लापरवाही एवं उदासनीता प्रदर्शित करता है। इस तरह श्री रमन प्रताप सिंह वन पाल एवं श्री पिताम्बर लाल राजवाड़े, वनरक्षक को अपने पदीय दायित्वों का निर्वहन में उदासीनता एवं घोर लापरवाही बरते जाने के कारण छत्तीसगढ़ सिविल सेवा आचरण नियम 1965 के नियम 3 का उल्लंघन/कदाचरण पाये जाने के कारण प्रथम दृष्ट्या दोषी पाये जाने के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (वर्गीकरण नियंत्रण एवं अपील) नियम 1966 के तहत नियम 9 (1)(क) के तहत तत्काल प्रभाव से निलंबित करते हुए उनकी मुख्यालय, बैकुण्ठपुर वनमण्डल कोरिया निर्धारित किया गया है।

कब और कितने दिन पुरानी घटना?

वन विभाग की विज्ञप्ति में बाघ की मौत का समय दिन नही बताया गया है, क्योंकि बाघ के शव की दुर्गंध एक किमी के क्षेत्र में फैली हुई थी, जिससे साफ है कि बाघ की मौत दो से तीन दिन पूर्व हो चुकी है। परंतु विभाग बाघ की मौत की सही जानकारी छुपाने की कोशिश कर रहा है।वही वन कर्मचारी पदस्थ मुख्यालय में नही रहने से बाघ जैसे संवेदनशील मामले में सड़क किनारे बाघ की मौत व बाघ के विचरण तक कि जानकारी इन्हें नही है जिससे वन विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों की भूमिका को लेकर भी सवाल उठना लाजमी हैं !

नाखून दांत को लेकर संशय

वन विभाग के एक अधिकारी पर पशु विभाग के डायरेक्टर रहते भ्रष्टाचार के कई मामलों को दबाने का आरोप लगता रहा है। यही कारण है कि उनके द्वारा बाघ को मीडिया की नज़रों से दूर रखा ताकि नाखून दांत मूंछे के गायब होने की जानकारी सामने न आ सके। सोशल मीडिया में आई बाघ की तस्वीरों से साफ देखा जा सकता है कि उसकी मूंछे दांत गायब दिख रहे है। यही कारण हैं कि सूचना पर आए अधिकारी ने मृत बाघ के पास कोई नही जा सके बेरिकेट्स लगवा दिए, मीडिया को मृत बाघ को नही दिखाया। जब बाघ के शव को आग के हवाले कर दिया गया तब मीडिया को बुलाया गया।ताकि विभाग की छवि बनी रहे ।

बाघ के विचरण की जानकारी

प्रेस विज्ञप्ति में दोनो विभाग ने बाघ के विचरण की जानकारी छिपाई है। टाइगर रिज़र्व बनने के लिए अग्रसर गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान में बाघों के विचरण गतिविधियों की जानकारी में लापरवाही बरती जा रही है यही कारण है कि मृत बाघ की आवाजाही का रिकॉर्ड विभाग के पास नही है।

बाघ की मौत का कारण जहर खुरानी से और इस अनसुलझे सवालों का नही है कोई जवाब?

कोरिया वन क्षेत्र में मिला बाघ का शव जहर खुरानी की आंशका की खबर पर लगी मुहर पर सवाल यह है कि बाघ तक जहर कैसे पहुंच रहा है? कोरिया जिले के कोरिया वन मंडल के सोनहत में बाघ की मौत को लेकर कोरिया वन मंडल और गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बाघ की मौत का संभावित कारण जहरखुरानी बताया है, परंतु विभाग प्रेस के सवालों से अब भी भाग रहा है। वही कई अनसुलझे सवालों का जवाब विभाग के अधिकारियों के पास नही है। बाघ की मौत कहीं हत्या तो नहीं जो जहर से हुई?

क्या बताया गया विज्ञप्ति में

कोरिया वन मण्ड़ल और गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि दिनांक 08.11.2024 को समय अपरान्ह 1.00 बजे ग्रामीणों से परिसर रक्षक गरनई को सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम कटवार के पास खनखोपड़ नाला के किनारे एक बाघ की मृत्यु हुई है। घटना स्थल बीट गरनई, सर्किल रामगढ़, परिक्षेत्र सोनहत, कोरिया वनमण्डल के असीमांकित वनक्षेत्र (कक्ष कमांक पी 196) के समीप है। संबंधित वनरक्षक के द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित किया गया। तत्काल वनमण्डलाधिकारी कोरिया, संचालक गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान बैकुन्ठपुर, उपवनमण्डलाधिकारी उत्तर बैकुन्ठपुर, मुख्य वन संरक्षक सरगुजा वन वृत्त अम्बिकापुर, वन संरक्षक (वन्यप्राणी) सरगुजा मौके पर पहुंचे। वन विभाग के कर्मचारियों की टीम के द्वारा घटना स्थल के आसपास 1.5 से 2 कि.मी. परिधि में तलाशी की गई। प्रथम दृष्ट्या शव 2-3 दिन पुराना प्रतीत होता है। दिनांक 09.11.2024 को वन विभाग, पुलिस विभाग, एनटीसीए प्रतिनिधि एवं ग्रामीणों की उपस्थिति में 4 सदस्यीय पशु चिकित्सकों की टीम द्वारा शव विच्छेदन किया गया। उक्त टीम के अभिमत अनुसार बाघ की मृत्यु का कारण जहरखुरानी संभावित है। शव विच्छेदन उपरांत शव को नियमानुसार दाह संस्कार किया गया। शव विच्छेदन के दौरान मृत टाईगर के आवश्यक अंगों को प्रयोगशाला परीक्षण के लिए प्रिजर्व किया गया। घटना स्थल के आसपास के क्षेत्र में गोमार्डा अभ्यारण्य के डॉग स्क्वायड टीम द्वारा पतासाजी किया गया तथा कोरिया वनमण्डल एवं गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान बैकुन्ठपुर की संयुक्त टीम के 4 दलों के द्वारा आसपास के क्षेत्रों में निरीक्षण किया गया। सम्पूर्ण कार्यवाही के दौरान अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) रायपुर उपस्थित रहे एवं समस्त वन अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपराधियों की पतासाजी करने एवं वाईल्ड लाईफ काईम नियंत्रण के लिए निर्देश दिया गया। मृत टाईगर के स्किन, नाखून, दॉत एवं सभी अंग सुरक्षित थे, किसी भी प्रकार का अंग-भंग नहीं पाया गया। टाईगर मृत्यु के सभी संभावित कारणों की विवेचना की जा रही है।

राष्ट्रीय पशु की मौत पर चीफ जस्टिस ने लिया संज्ञान कहा टाइगर हिंदुस्तान में जल्दी मिलता नहीं...अफसोस ये कि जो है उसे भी नहीं बचा पा रहे...

छत्तीसगढ़ के जंगल में वाइल्ड लाइफ को सुरक्षित रखने की मांग को लेकर दायर जनहित याचिका पर सोमवार को चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा व जस्टिस एके प्रसाद की डिवीजन बेंच में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने सूरजपुर जिले के गुरु घासीदास टाइगर रिजर्व एरिया में बीते दिनों टाइगर की मौत को लेकर जवाब-तलब किया। चीफ ने टाइगर की मौत को लेकर नाराजगी जताई। सीजे ने कहा कि छत्तीसगढ़ में जंगल और वन्य प्राणियों को नहीं बचा पाएंगे तो करेंगे क्या। नाराज चीफ जस्टिस ने प्रधान मुख्य वन संरक्षक को नोटिस जारी कर शपथ पत्र के साथ जवाब पेश करने का निर्देश दिया है। डिवीजन बेंच ने पीआईएल की सुनवाई के लिए 21 नवंबर की तिथि तय कर दी है। चीफ जस्टिस ने वन विभाग और राज्य शासन के अधिवक्ताओं से पूछा कि वाइल्ड लाइफ के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में क्या कदम उठाए जा रहे हैं। विभाग के साथ ही राज्य शासन की क्या योजना है। हर हाल में जंगल और वन्य प्राणियों की सुरक्षा जरुरी है। इसके लिए ठोस कदम उठाने होंगे। राज्य शासन की ओर से पैरवी करते हुए महाधिवक्ता प्रफुल्ल भारत ने टाइगर की मौत को लेकर कोर्ट को जानकारी दी। विभाग की ओर से टीम गठित कर जांच पड़ताल की जानकारी भी दी। महाधिवक्ता के जवाब के बाद डियाजन बचन प्रधान मुख्य वन सरक्षक का शपथ-पत्र के साथ जानकारी दिया है। चीफ जस्टिस ने वन विभाग के अफसरों से पूछा कि वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं। अगली सुनवाई के दौरान पूरी योजना के साथ उपस्थित होने का निर्देश दिया है।

खेल की संक्षिप्त खबरें

अक्टूबर के लिए पाकिस्तान के नोमान अली ने जीता पुरस्कार

नई दिल्ली, 12 नवंबर 2024। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम के स्पिनर नोमान अली को अक्टूबर महीने के लिए प्लेयर ऑफ द मंथ चुना है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के कगिसो रबाडा और न्यूजीलैंड के मिचेल सेंटनर को पीछे छोड़ते हुए ये पुरस्कार जीता है।उन्होंने पिछले महिले इंग्लैंड क्रिकेट टीम के खिलाफ टेस्ट सीरीज में कमाल किया था।महिलाओं में कीवी टीम की अमेलिया केर ने ये पुरस्कार जीता है।

एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेंगे मोहम्मद नबी

शारजाह, 12 नवंबर 2024। अफगानिस्तान के ऑलराउंडर मोहम्मद नबी ने घोषणा की है कि वह अगले साल पाकिस्तान में होने वाली चैंपियन्स ट्रॉफी के बाद एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेंगे। यहां बांग्लादेश पर अफगानिस्तान की एकदिवसीय श्रृंखला में 2-1 से जीत के बाद 39 साल के नबी ने कहा कि वह पिछले साल एकदिवसीय विश्व कप के बाद से इस प्रारूप को अलविदा कहने पर विचार कर रहे थे। श्रृंखला के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए नबी ने आधिकारिक प्रसारणकर्ता से कहा, ''पिछले विश्व कप से मेरे दिमाग में था कि मैं संन्यास ले रहा हूं।

इंडिया साऊथ अफ्रीका तीसरा टी 20 मैच आज

» हार के बाद बदलेगी टीम इंडिया की प्लेयिंग 11

» कप्तान सूर्या इन 2 प्लेयर्स को दे सकते हैं डेब्यू का मौका

पर्थ, 12 नवंबर 2024। टीम इंडिया को साउथ अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टी20 मैच में 3 विकेट से करारी हार झेलनी पड़ी। इस मैच को जीतते ही अफ्रीका ने सीरीज में 1-1 से हासिल कर ली। दूसरे टी20 मैच में भारतीय बल्लेबाज बुरी तरह से फ्लॉप रहे और अच्छा प्रदर्शन करने में नाकाम साबित हुए। अब दोनों टीमों के तीसरा मुकाबला 13 नवंबर को सेंचुरियन के मैदान पर खेला जाएगा। दूसरे टी20 में मिली हार

के बाद टीम इंडिया के प्लेइंग इलेवन में बदलाव की संभावना है।

संजू सैमसन ने पहले टी 20 मैच में लगाया था शतक

अभिषेक शर्मा टीम इंडिया की कमजोर कड़ी साबित हो रहे हैं। अभी तक साउथ अफ्रीका के खिलाफ सीरीज में वह लय में दिखाई नहीं दिए हैं। उन्होंने 4 और 7 रनों की पारियां खेली हैं। दूसरी तरफ संजू सैमसन ने पहले टी20 में शतक लगाया था और 107 रनों की दमदार पारी खेली थी। दूसरे मैच में उनका बल्ला खामोश रहा और वह जीरो रन पर आउट हो गए। ये दोनों ही खिलाड़ी ओपनिंग करते हुए दिखाई दे सकते हैं। तीसरे नंबर पर कप्तान सूर्यकुमार यादव का उतरना तय लग रहा है। इस दौरे पर सूर्यकुमार भी बड़ी पारी नहीं खेल पाए। लेकिन एक बार सूर्या लय में आ गए, तो वह चंद गेंदों में ही मैच का रुख बदलने की काबिलियत रखते हैं।

मिडिल ऑर्डर में हो सकता है बदलाव

दूसरे टी20 मैच में भारतीय बल्लेबाज रन बनाना तो दूर क्रीज पर टिकने के लिए तरस रहे थे। बल्लेबाजों की खराब फॉर्म का खामियाजा टीम इंडिया को मुकाबला हारकर चुकाना पड़ा। ऐसे में दूसरे टी20 के लिए मिडिल ऑर्डर में बदलाव हो सकते हैं। रिंकू सिंह, हार्दिक पांड्या और रमनदीप सिंह को मौका मिल सकता है। हाल ही में इमर्जिंग एशिया कप में रमनदीप ने अच्छा प्रदर्शन किया और उन्होंने फील्डिंग करते हुए कई करिश्माई कैच पकड़े। ऐसे में उन्हें डेब्यू का मौका मिल सकता है।

3 स्पिनर्स को मिल सकता है मौका

दूसरी तरफ गेंदबाजी में दूसरे टी20 मैच में आवेश खान बहुत महंगे साबित हुए थे। उन्होंने अपने तीन ओवर में 23 रन लुटाए थे और वह एक भी विकेट लेने में कामयाब नहीं हो पाए थे। ऐसे में उनकी जगह विजय कुमार वैशाक को चांस मिल सकता है। वह अर्शदीप सिंह का साथ निभाते हुए नजर आएंगे। स्पिन विभाग की जिम्मेदारी अक्षर पटेल, वरुण चक्रवर्ती और रवि बिश्नोई को सौंपी जा सकती है। वरुण ने पहले टी20 मैच में 5 विकेट लेकर तहलका मचाया था।

तीसरे टी 20 मैच के लिए भारतीय टीम की संभावित प्लेइंग इलेवनः-

सूर्यकुमार यादव (कप्तान), संजू सैमसन, अभिषेक शर्मा, रिंकू सिंह, हार्दिक पांड्या, रमनदीप सिंह, अक्षर पटेल, वरुण चक्रवर्ती, रवि बिश्नोई, विजय कुमार वैशाक, अर्शदीप सिंह।

टेस्ट डेब्यू के साथ मैकस्वीनी चुनौती के लिए तैयार

नई दिल्ली, 12 नवंबर 2024। ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज नाथन मैकस्वीनी पर्थ में पहले टेस्ट मैच में अपना टेस्ट पदार्पण करने के लिए तैयार हैं। वह आगामी बॉर्डर-गावस्कर सीरीज के दौरान भारत के शक्तिशाली तेज गेंदबाजी आक्रमण का सामना करने के लिए आश्वस्त हैं। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के कप्तान का मानना है कि वह इस समय शीर्ष बल्लेबाजी फॉर्म में हैं।

मैकस्वीनी ने 2024/25 सीजन की शुरुआत दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के लिए 55, नाबाद 127, 37, 72 और 137 के स्कोर के साथ की है और भारत ए के खिलाफ दो अनऑफिशियल टेस्ट मैचों में ऑस्ट्रेलिया ए के लिए 39, नाबाद 88, 14 और 25 रन जोड़े हैं।

25 वर्षीय खिलाड़ी को आधिकारिक तौर पर 22 नवंबर से पर्थ में भारत के खिलाफ शुरू होने वाले पहले टेस्ट के लिए उस्मान ख्वाजा के सलामी जोड़ीदार

के रूप में घोषित किया गया था।

मैकस्वीनी ने एसईएन रेडियो से कहा, पिछले एक महीने में मुझे वाकई ऐसा लग रहा है कि मैं अब तक की सबसे अच्छी बल्लेबाजी कर रहा हूं। मुझे लगता है कि मैं इस अवसर को लेने के लिए अब तक का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हूं, इसलिए उम्मीद है कि मैं ऐसा कर पाऊंगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मुझे बहुत कुछ सीखने और अनुभव करने को मिला है। मैं टेस्ट क्रिकेट की चुनौतियों के बारे में सब कुछ सीखने और सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के खिलाफ अपने खेल को चुनौती देने के लिए उत्सुक हूं। मुझे बहुत कुछ सीखने और सुधार करने की उम्मीद है, लेकिन मुझे निश्चित रूप से लगता है कि यह मेरा अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है और मैं चुनौती के लिए तैयार हूं। मैकस्वीनी ने आगे बताया कि उन्होंने जसप्रीत बुमराह की अगुवाई वाली भारतीय तेज गेंदबाजी आक्रमण की तैयारियों के लिए भारतीय तेज गेंदबाजों के पुराने वीडियो देखना शुरू कर दिया है। मैकस्वीनी ऑस्ट्रेलिया में चल रही घरेलू शेफील्ड शील्ड प्रतियोगिता में सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ियों की सूची में पांचवें स्थान पर हैं। हाल ही में भारत ए के खिलाफ खेले गए मैचों में ठोस योगदान के दम पर उन्हें टेस्ट टीम में शामिल किया गया है।

रणजी ट्रॉफी 2024-25: मोहम्मद शमी की वापसी का हुआ एलान

नई दिल्ली, 12 नवंबर 2024। भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी रणजी ट्रॉफी 2024-25 के जरिए मैदान में वापसी करने के लिए तैयार हैं।ऐसी खबर है कि वह 13 नवंबर से मध्यप्रदेश क्रिकेट टीम के खिलाफ होने वाले मैच में बंगाल की टीम से खेलते दिखेंगे।शमी वनडे विश्व कप 2023 के बाद से चोट के चलते किसी तरह के पेशेवर मैचों में नहीं खेले हैं। बंगाल क्रिकेट संघ के सचिव नरेश ओझा ने शमी की वापसी की जानकारी दी है। रिपोर्ट के मुताबिक, ओझा ने एक बयान में कहा, शमी बुधवार से इंदौर में मध्य प्रदेश के खिलाफ शुरू हो रहे रणजी ट्रॉफी मैच में बंगाल के लिए प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी करेंगे।नेशनल क्रिकेट अकादमी ने उन्हें खेलने की अनुमति दे दी है। बाएं घुटने में सूजन के कारण उन्हें ठीक होने में देरी हुई। इन चुनौतियों के बावजूद शमी अपनी वापसी को लेकर आशान्वित हैं। पिछले 6 महीनों में से अधिकांश समय उन्होंने बेंगलुरु की नेशनल क्रिकेट एकेडमी में ही बिताया।

पाक से छिनी मेजबानी तो सा. अफ्रीका में खेली जाएगी चैंपियंस ट्रॉफी

नई दिल्ली, 12 नवंबर 2024। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की मेजबानी को लेकर बवाल मचा हुआ है। अगले साल पाकिस्तान की मेजबानी में फरवरी-मार्च में ये आईसीसी इवेंट होना है। मगर, बीसीसीआई ने भारतीय टीम को पाकिस्तान भेजने से साफ इनकार कर दिया गया। इसके बाद अब रिपोर्ट के हवाले से खबरें आ रही हैं कि पाकिस्तान की सरकार पीसीबी को मेजबानी छोडने के लिए कह सकती है। यदि ऐसा होता है तो आईसीसी किसी और देश को इसकी मेजबानी सौंपी जा सकती है।पाकिस्तान के पास चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की मेजबानी है. मगर, बीसीसीआई ने आईसीसी को ये बता दिया है कि वह पाकिस्तान नहीं जाएगी। इसके बाद से ही खबरें आ रही थीं कि पीसीबी आईसीसी इवेंट को हाइब्रिड मॉडल में करा सकता है लेकिन, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड इसके लिए तैयार नहीं है।अब रिपोर्ट्स में खुलासा हुआ है कि पाकिस्तान सरकार उसे मेजबानी से हटने के बारे में कह सकती है. इसके अलावा किसी भी आईसीसी या एशिया कप टूर्नामेंट भारत के खिलाफ खेलने से टीम को मना भी किया जा

सकता है। यदि पाकिस्तान चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की मेजबानी करने से पीछे हटता है, तो इसमें कोई नई बात नही होगी। जी हां, ये पहला मौका नहीं होगा जब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने मेजबानी गंवाई है। इससे पहले 2008 में पाकिस्तान को चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी करनी थी, लेकिन वह इसे आयोजित नहीं कर सके। फिर 2009 में साउथ अफ्रीका में इसे आयोजित किया गया था।

अब सवाल उठता है कि यदि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की मेजबानी छिनती है, तो आगे टीम की कमान कौन संभालेगा। रिपोर्ट्स की मानें, तो आईसीसी ने पीसीबी को पत्र लिखकर पूछा है कि क्या हाइब्रिड मॉडल में इवेंट कराने के लिए तैयार है?

अब यदि पाकिस्तान इसे लेकर नहीं मानता है तो आईसीसी टूर्नामेंट की मेजबानी साउथ अफ्रीका को मिल सकती है. अब तक पीसीबी ने अपना जवाब नहीं दिया है, लेकिन बताया गया है कि वह पाकिस्तान सरकार के साथ बातचीत कर रहा है. इतना ही नहीं पीसीबी भारत के खिलाफ और भी कई सीरियस कदम उठाने पर विचार कर रही है.

पर्थ स्टेडियम में लगा लॉकडाउन

पर्थ 12 नवंबर 2024। आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2024-25 साइकल की सबसे अहम टेस्ट सीरीज 22 नवंबर से पर्थ में शुरु होगी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में इस बार चार की जगह पांच टेस्ट मैच खेले जाने हैं और इस टेस्ट सीरीज का रिजल्ट ये फैसला करेगा की डब्ल्यूटीसी 2023-25 के फाइनल में भारत जगह बना पाएगा या नहीं। टेस्ट सीरीज का पहला मैच 22 नवंबर से पर्थ में खेला जाना है। पर्थ के पुराने टेस्ट वेन्यू डब्ल्यूसीए यानी वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट एसोसिएशन पर भारतीय टीम ने सीक्रेट ट्रेनिंग कैंप लगाया है। डब्ल्यूसीए स्टेडियम के चारों तरफ नेट्स लगाए गए हैं और इसके पब्लिक के लिए बंद कर दिया गया है।

पंत,अय्यर और केएल.किन टीमों के बनेंगे कप्तान

नई दिल्ली, 12 नवंबर 2024। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 मेगा ऑक्शन में कई अनुभवी भारतीय खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं, जो इसे और भी दिलचस्प बना रहा है। सभी की नजरें ऋषभ पंत, श्रेयस अय्यर और केएल राहुल पर होंगी, जो इस बार नीलामी में आ रहे हैं। हालांकि, मेगा ऑक्शन से पहले लगभग क्लीयर ही हो चुका है कि कौन सा खिलाड़ी अपकमिंग सीजन में कौन सी टीम में जाने वाला है और किसकी कप्तानी करने वाला है। तो आइए आपको इन तीनों ही खिलाड़ियों से जुड़ी रिपोर्ट्स के बारे में बताते हैं।

कोलकाता नाइट राइडर्स श्रेयस अय्यर को रिटेन करना चाहती थी, लेकिन खिलाड़ी की इच्छा का सम्मान करते हुए फ्रेंचाइजी ने उन्हें रिलीज कर दिया। रिपोर्ट्स की मानें, तो श्रेयस अय्यर को उनकी पुरानी फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स से अच्छा ऑफर मिला है। मोटी सैलरी के साथ उन्हें डीसी की कमान सौंपी जा सकती है.। ऐसे में ये कहना गलत नहीं होगा कि आईपीएल 2025 में अय्यर दिल्ली कैपिटल्स की नीली

जर्सी में नजर आ सकते हैं। दिल्ली कैपिटल्स से ऋषभ पंत ने अपने रास्ते अलग कर लिए और आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में पहुंच गए। पंत को खरीदने वाली टीम को 3 फायदे होने वाले हैं। वह एक शानदार विकेटकीपर, विस्फोटक बल्लेबाज और कैप्टेंसी ऑप्शन हैं. खबरें हैं कि चेन्नई सुपर किंग्स इस खिलाड़ी को मेगा ऑक्शन में खरीद सकती है। चूंकि, धोनी के बाद टीम को एक तेजतर्रार विकेटकीपर की जरूरत होगी, जिसकी कमी पंत पूरी कर सकते हैं। जब से केएल राहुल लखनऊ सुपर जायंट्स से रिलीज होकर मेगा ऑक्शन में पहुंचे हैं, तभी से खबरें आ रही हैं कि वह अपकमिंग सीजन में आरसीबी में जा सकते हैं. असल में, रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु ने अपने कप्तान फाफ डु प्लेसिस को रिलीज कर दिया है और उन्हें दिनेश कार्तिक के रिप्लेसमेंट के तौर पर एक अनुभवी विकेटकीपर की भी तलाश है।ऐसे में फ्रेंचाइजी केएल राहुल को आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन से खरीदकर टीम की कमान सौंप सकती है. राहुल एक अच्छे ओपनर, विकेटकीपर और कैप्टेंसी विकल्प होंगे।

सूर्या और बॉबी देओल की कंगुवा का एक और ट्रेलर हुआ रिलीज

सिनेमाघरों में इन दिनों अजय देवगन की सिंघम अगेन और कार्तिक आर्यन की हॉरर कॉमेडी फिल्म भूल भुलैया 3 धमाल मचा रही हैं. हालांकि अब इन दोनों फिल्मों की छुट्टी करने के लिए सूर्या और बॉबी देओल की कंगुवा' आ रही है। हाल ही में इस फिल्म का दूसरा ट्रेलर रिलीज किया गया है जिसमें सूर्या और बॉबी देओल का धांसू एक्शन देख आपका दिमाग हिल जाएगा। चलिए यहां कंगुवा' की स्टार कास्ट, बजट से लेकर रिलीज डेट तक सबकुछ जानते हैं।सूर्या और बॉबी देओल स्टारर कंगुवा' साल 2024 की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक है। इस अपकमिंग फिल्म के पोस्टर और अब रिलीज किए गए दूसरे ट्रेलर ने कंगुवा' को लेकर फैंस की एक्साइटमेंट पीक पर पहुंचा दी है। दूसरे ट्रेलर में सूर्या और बॉबी देओल होश उड़ा देने वाले लुक में नजर आ रहे हैं.ट्रेलर में सूर्या दो अलग-अलग टाइमलाइन में नजर आते हैं. एक में वह मॉर्डन युग में स्टाइलिश अंदाज में नजर आ रहे हैं जबकि दूसरे में वह अतीत में दुश्मनों से लड़ते हुए एक क्रूर योद्धा के रूप में दिखाई दे रहे है। ट्रेलर में बॉबी देओल भी खतरनाक अवतार में दिख रहे हैं.

ओवरऑल कंगुवा' का ट्रेलर दिमाग हिला देने वाला है। तमिल पीरियड ड्रामा फिल्म कंगुवा' को साल की सबसे बड़ी और महंगी फिल्मों में से एक बताया जा रहा है। इस फिल्म का बजट 350 करोड़ से ज्यादा का बताया जा रहा है। इसके साथ ही बता दें कि इस फिल्म की शूटिंग कई देशों और भारत में कई महाद्वीपों पर की गई है.कंगुवा' की स्टार कास्ट की बात करें तो फिल्म में सूर्या और बॉबी देओल के अलाला दिशा पटानी, नटराजन सुब्रमण्यम, जगपति बाबू, योगी बाबू, रेडिन किंग्सले, कोवई सरला आनंदराज, मारीमुथु, दीपा वेंकट, रवि राघवेंद्र और केएस रविवार कुमार ने अहम रोल प्ले किया है। कंगुवा'की स्टार कास्ट की फीस की बात करें तो मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिकइस फिल्म से सबसे मोटी रकम सूर्या ने वसूली है। रिपोर्ट्स के मुताबिक सूर्या ने फिल्म से 39 करोड़ रुपये चार्ज किए हैं और उनका फिल्म के प्रॉफिट शेयरिंग में भी हिस्सा बताया जा रहा है। वहीं बॉबी देओल की फीस काफी कम बताई जा रही है. उन्हें फिल्म में उधिरन के रोल के लिए मह 5 करोड़ रुपये बतौर फीस मिली है जबकि दिशा पटानी की फीस 3 करोड रुपये बताई जा रही है।कंगुवा' के पोस्टर और ट्रेलर की रिलीज के बाद फैंस अब इस फिल्म के सिनेमाघरों में रिलीज होने का इंतजार नहीं कर पा रहे हैं. वैसे बता दें कि कंगुवा' इस 14 नवंबर को बड़े पर्दे पर रिलीज होने जा रही है. ये दुनियाभर में 10 भाषाओं में रिलीज होगी।

66 साल की उम्र में मुकेश खन्ना फिर से बनने जा रहे हैं शक्तिमान

लोग खूब उड़ा रहे मजाक,भारत के पहले सुपरहीरो की पोशाक में फिर नजर आये एक्टर

भारत के असली सुपरहीरो शक्तिमान की भूमिका निभाने के लिए मशहूर दिग्गज अभिनेता मुकेश खन्ना ने भारतीय स्क्रीन पर इस प्रतिष्ठित किरदार की वापसी की घोषणा करके प्रशंसकों को रोमांचित कर दिया। सोमवार को एएनआई से बात करते हुए, अभिनेता ने इस भूमिका के साथ अपने गहरे जुड़ाव और इसे फिर से निभाने के लिए अपनी उत्सुकता के बारे में खुलकर बात की। मुकेश खन्ना ने साझा किया यह मेरे भीतर की एक पोशाक है। व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है कि यह पोशाक मेरे भीतर से आई है... मैंने शक्तिमान के रूप में अच्छा प्रदर्शन किया क्योंकि यह किरदार मेरे भीतर से आता है। अभिनय का मतलब आत्मविश्वास है। जब मैं शूटिंग कर रहा होता हूं, तो मैं कैमरे के बारे में भूल जाता हूं। मैं फिर से शक्तिमान बनकर दूसरों से भी ज्यादा खुश हूं।÷

जब अमृता सिंह के घर डिनर करने गए सैफ ने दो दिन तक वहीं जमा लिया था डेरा

बॉलीवुड की बेबो उर्फ करीना कपूर से शादी करने से पहले सैफ अली खान ने अमृता सिंह से शादी की थी, जिससे उनके दो बच्चे सारा अली खान और इब्राहिम अली खान भी हैं। सैफ अली खान और अमृता सिंह दोनों की लव मैरिज थी और 90 के दौर में दोनों की लव स्टोरी काफी सुर्खियों में रही थीं। उन्होंने 1991 में शादी की थी और 13 साल बाद 2004 में दोनों अलग हो गए थे।आज हम आपको बताते हैं सैफ अली खान और अमृता सिंह की शादी से पहले का एक ऐसा किस्सा जब सैफ अमृता के घर डिनर पर गए और वहां से वापस ही नहीं आए, उनसे पैसे तक उधार लिए। सिमी ग्रेवाल के साथ इंटरव्यू के दौरान अमृता सिंह और सैफ अली खान ने अपनी लव स्टोरी के बारे में बताया था कि कैसे एक फोटो शूट के दौरान उनकी मुलाकात हुई, फिर वो डिनर डेट पर मिले और आखिर में उनकी शादी हुई. सैफ अली खान ने बताया कि उन्होंने अमृता को फोन करके पूछा कि क्या वह उनके साथ डिनर के लिए बाहर जाना चाहेंगी? लेकिन उन्होंने जवाब दिया मैं डिनर के लिए बाहर नहीं जाती, अगर आप चाहें तो डिनर के लिए घर आ सकते हैं। इसके बाद सैफ अली खान उनके घर डिनर पर गए और दोनों ने एक साथ रात का खाना खाया। सैफ ने बताया था कि उसके बाद मैं अमृता के घर से नहीं गया और वहीं ठहर गया। सैफ ने बताया कि मैं दूसरे कमरे में सोता था, पूरे दो दिन तक सैफ अमृता के घर पर रहे, लेकिन उसके बाद उन्हें शूटिंग के लिए जाना पड़ा।

जब सैफ अली खान अमृता सिंह के घर पर रुके थे तब उनके पास पैसे नहीं थे, उन्होंने अमृता से 100 रुपये उधार मांगे, जिस पर अमृता ने उन्हें अपनी कार देने की बात भी कही, लेकिन सैफ ने कहा कि प्रोडक्शन की कार उनका इंतजार कर रही है। बता दें कि इसके बाद सैफ और अमृता का रिलेशन आगे बढ़ा और दोनों ने गुपचुप तरीके से शादी की। उस समय सैफ की मां शर्मिला टैगोर ने कहा था तुम खुश हो, लेकिन 21 के ही हो इसलिए शादी मत करना। लेकिन सैफ ने किसी की नहीं सुनी 1991 में दोनों ने शादी की। दोनों 13 साल तक एक साथ रहे, फिर 2004 में दोनों का डिवोर्स हो गया. इसके बाद सैफ अली खान ने करीना कपूर से शादी की। करीना से उनके दो बेटे तैमूर और जेह अली खान हैं।

रायपुर दक्षिण विधानसभा के लिए उपचुनाव आज

» रायपुर दक्षिण में बनाए गए कुल 266 मतदान केंद्र

» रायपुर दक्षिण के 2.70 लाख मतदाता चुनेंगे विधायक...

» 10 संगवारी बूथ पूरी तरह महिलाओं द्वारा होंगे संचालित...

रायपुर,12 नवम्बर 2024(ए)। रायपुर दक्षिण के लिए मतदान 13 नवंबर को किया जाएगा। इसके लिए चुनाव आयोग तैयारियों में लगा हुआ है। रायपुर दक्षिण के लिए 266 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। जिसमें से 253 मुख्य सामान्य मतदान केंद्र, जबकि 13 उप मतदान केंद्र बनाए गए हैं।

वहीं, कुछ आदर्श मतदान केंद्र बनाए गए हैं। जिनमें से 10 संगवारी बूथ बनाए गए हैं, इन मतदान केंद्रों में सिर्फ महिलाएं ही रहेंगी और पूरा प्रबंधन देखेंगी। जिसमें पीठासीन अधिकारी से लेकर अन्य सभी सहायक स्टाफ महिलाएं ही रहेंगी।

वहीं, एक मतदान केंद्र दिव्यांगों के भरोसे संचालित किया जाएगा। इसमें सभी स्टाफ दिव्यांग ही रहेंगे। वहीं, पांच बूथ युवा प्रबंधित रहेंगे। इन मतदान केंद्रों में 30-35 वर्ष के युवा कर्मचारियों की टीम इनका प्रबंधन देखेगी। इस पूरी चुनाव प्रक्रिया में 1500 कर्मचारियों की टीम रहेगी, जो कि सुबह सात बजे से लेकर शाम छह बजे तक मतदान प्रक्रिया करवाएगी। इस उपचुनाव में पिछली बार की तुलना में 10 हजार से ज्यादा मतदाता नए बने हैं और इस बार 2,71,169 मतदाता मतदान करेंगे।

मतदान दल रवाना, 13 नवंबर को 2.71 लाख मतदाता करेंगे मताधिकार का प्रयोग

छत्तीसगढ़ के रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट के लिए आगामी 13 नवंबर को उपचुनाव में मतदान होने जा रहा है। इस अवसर के लिए आज शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, सेजबहार से मतदान दलों को आवश्यक सामग्री के साथ रवाना किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह और एसएसपी डॉ. संतोष सिंह की उपस्थिति में यह प्रक्रिया संपन्न हुई।कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने जानकारी दी कि मतदान प्रक्रिया को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। मतदान केंद्रों पर बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया जाएगा, ताकि शांतिपूर्ण मतदान सुनिश्चित हो सके। साथ ही, अधिक से अधिक मतदाताओं की भागीदारी के लिए जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है। इस उपचुनाव में 2,71,169 मतदाता मतदान करेंगे, जिनमें 1,33,800 पुरुष, 1,37,317 महिला और 52 तृतीय लिंग मतदाता शामिल हैं। मतदान के लिए कुल 266 मतदान केंद्र स्थापित किए गए हैं, जिन्हें 42 सेक्टरों में विभाजित किया गया है।

मतदान दलों को बांटा गया सामग्री

मतदान दलों की टीमों को मतदान सामग्रियों का वितरण मंगलवार सुबह सेजबहार से किया गया। इसके लिए कलेक्ट्रेट कार्यालय से सुबह सात बजे से बसों की व्यवस्था की गई। वहां मतदान दल अपनी-अपनी सामग्रियां लेने के बाद सीधे निर्धारित मतदान केंद्र पहुंचे और व्यवस्था संभाला।

दो हजार जवान संभालेंगे मोर्चा

दक्षिण के चुनाव के लिए बनाए गए मतदान केंद्रों में सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद करने के लिए दो हजार जवानों की ड्यूटी लगाई गई है। जिसमें सीआरपीएफ और पुलिस की टीम शामिल है। इन्होंने एक दिन पहले से ही मोर्चा संभाल लिया है और मतदान केंद्रों में व्यवस्था संभाल रहे हैं।

शाम छह बजे तक... मतदान, रिजल्ट 23 को

मतदान के लिए इस बार सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक मतदान की सुविधा दी जा रही है। मतदान के बाद सभी दल सेजबहार स्थित स्ट्रांग रूम में देर रात तक अपनी सामग्रियां जमा करेंगे। वहीं, उपचुनाव के परिणाम 23 नवंबर को सामने आएंगे।

प्रदेश की संक्षिप्त खबरें

विधायक रिकेश सेन को कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने कहा मांगे माफी

भिलाई ,12 नवम्बर 2024(ए)। वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन इन दिनों खूब चर्चा में बने हुए है। चाहे व भिलाई के तालाब का नाम भोजपुरी गायिका के नाम पर रखने की घोषणा हो या फिर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नाम पर गलत बयान देने का मामला हो। अब कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने रिकेश सेन का सार्वजनिक तौर पर गलत बयान के सबूत दिखाने कहा है अन्यथा उन्हें सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने की बात कही है। इतना ही नहीं उन्होंने माफी नहीं मांगने पर केस लड़ने कहा है।

भिलाई शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर ने वैशाली नगर के विधायक रिकेश सेन को सार्वजनिक माफी मांगने या फिर बयान का सबूत मांगा है।

कलेक्टर ने की धान की कटाई

» खेत में अफसर को पाकर गदगद हुए किसान

बिलासपुर,12 नवम्बर 2024(ए)। बिलासपुर में पटवारियों ने गिरदावरी सत्यापन में लापरवाही बरती तो कलेक्टर अवनीश शरण खुद खेतों में पहुंच गए। इस दौरान महिला किसान को धान काटते देखकर कलेक्टर हाथ में हसिया लेकर खुद धान काटने लग गए। इस दौरान उन्होंने गिरदावरी का सत्यापन किया। इसके साथ ही धान खरीदी केंद्रों का भी निरीक्षण कर धान खरीदी का जायजा लिया। उन्होंने किसानों को धान बेचने के लिए न्योता भी दिया।

नक्सलियों ने जन अदालत लगाकर ग्रामीण को उतारा मौत के घाट

बीजापुर,12 नवम्बर 2024(ए)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के थाना जांगला क्षेत्र के ग्राम पोटेनार में नक्सलियों ने एक ग्रामीण की जन अदालत लगाकर हत्या कर दी। इस घटना ने क्षेत्र में दहशत का माहौल पैदा कर दिया है।माटवाड़ा निवासी माड़वी दुलारू को नक्सलियों ने पुलिस मुखबिरी का आरोप लगाते हुए निशाना बनाया। नक्सलियों ने कथित रूप से जन अदालत लगाई और इस दौरान माड़वी दुलारू को मुखबिर करार देते हुए उसकी निर्मम हत्या कर दी। घटना की सूचना मिलते ही जांगला थाना से पुलिस बल को जांच और सत्यापन के लिए गांव की ओर रवाना किया गया। पुलिस टीम घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की जांच में जुट गई है।

एसपी की गाड़ी का कटा चालान

ट्रैफिक नियम तोड़ने पर ठोका गया 2000 रुपये का जुर्माना

बिलासपुर,12 नवम्बर 2024(ए)। शहर में यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा रही है, चाहे वह आम नागरिक हो, अधिकारी हो, या किसी सरकारी पद पर हो। इसी कड़ी में बिलासपुर के पुलिस अधीक्षक (एसपी) को भी यातायात नियम तोड़ने का जुर्माना भरना पड़ा।

रविवार को बिलासपुर के एसपी रजनेश सिंह की गाड़ी का चालान काटा गया, जब उनकी गाड़ी ने सिग्नल जंप किया। घटना के दौरान एसपी स्वयं अपनी गाड़ी में नहीं थे, बल्कि कलेक्टर की गाड़ी में उनके साथ थे, जबकि उनकी गाड़ी पीछे आ रही थी। एसपी की गाड़ी जैसे ही सत्यम चौक के पास पहुंची, सिग्नल लाल हो गया और गाड़ी ने सिग्नल को पार कर दिया। चौराहे पर लगे एडवांस कैमरे ने तुरंत गाड़ी की तस्वीर खींच ली और आईटीएमएस (इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम) ने ई-चालान जारी कर दिया।एसपी रजनेश सिंह ने तुरंत चालान का भुगतान करते हुए कहा कि यातायात नियम सभी के लिए समान हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि यदि कोई नियम तोड़ता है, तो उसे सरकार द्वारा निर्धारित दंड भरना ही पड़ेगा। इस घटना ने शहर में एक उदाहरण पेश किया कि कानून के सामने सभी समान हैं, चाहे वह कानून के रक्षक ही क्यों न हों।

कटघोरा वनमंडल में रेंजर को निलंबित किया गया

» बिलासपुर में अधिकारियों को क्यों अभयदान

रायपुर,12 नवम्बर 2024 (ए)। छत्तीसगढ़ के कटघोरा वनमंडल में एतमानार परिक्षेत्र के रेंजर देवदत्त खाण्डे को विभागीय कार्यों में लापरवाही बरतने के कारण प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख ने तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। खाण्डे पर आरोप है कि उन्होंने अपने क्षेत्र में पी.ओ.आर. प्रकरणों की जांच और वन अपराध तथा वन्यजीवों के अवैध शिकार की रोकथाम में गंभीर लापरवाही और उदासीनता दिखाई, जिसके कारण उन्हें छ.ग सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम 1966 के तहत अनुशासनिक कार्यवाही की। वन विभाग द्वारा यह कार्रवाई कटघोरा वनमंडल के वनमंडलाधिकारी की जांच रिपोर्ट के आधार पर की गई है। रिपोर्ट में यह सामने आया कि खाण्डे ने अपने कार्यक्षेत्र में बिना कार्य किए प्रमाणक प्रस्तुत किए और वन्यजीवों की सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं किया। इसके अलावा, उन्होंने विभागीय निर्देशों की अनदेखी की और अपने अधीनस्थों द्वारा लम्बित प्रमाणक प्रस्तुत नहीं करने के मामले में भी निष्क्रियता दिखाई। इस लापरवाही के चलते निलंबन की अनुशासनात्मक कार्रवाई छत्तीसगढ़ सिविल सेवा नियमों के तहत की गई है।

बिलासपुर में हाथी शावक की मौत पर कार्रवाई नहीं निर्दोष का फसाया..

दूसरी ओर, बिलासपुर जिले के तखतपुर क्षेत्र में हाल ही में एक हाथी शावक की मौत की घटना ने वन विभाग की कार्यप्रणाली घेरे में ले लिया हैं। इस घटना से बिलासपुर मंडल में बेजुबान जानवरों की सुरक्षा पर सवाल उठ गए। तखतपुर में शावक की मौत को अभी तक कोई ठोस जांच या कार्रवाई लापरवाही करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों पर नहीं की गई है।

कटघोरा और बिलासपुर में वन विभाग की लापरवाही..

कटघोरा वनमंडल में रेंजर देवदत्त खाण्डे के निलंबन के बाद वन विभाग ने एक कदम तो उठाया है, लेकिन बिलासपुर में हाथी शावक की मौत जैसी गंभीर घटना पर अब तक विभागीय मौन और निष्क्रियता प्रशासनिक अनदेखी का को प्रमाण देती है। वन्यजीव संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर दोनों ही मामलों में विभाग की कार्यप्रणाली सवालों के घेरे में है। एक ओर, कटघोरा में अधिकारी की अनुशासनहीनता पर कार्रवाई हुई है, तो दूसरी ओर, बिलासपुर में हाथी शावक की मौत जैसी घटना पर चुप्पी और कार्रवाई का अभाव विभागीय तत्परता पर सवाल खड़े करता है।

क्या कारण हैं कि बिलासपुर वन मंडल में लापरवाही करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों पर तत्काल कार्यवाही करने में वन विभाग के उच्च अधिकारियों हाथ पांव फूल रहे हैं ?

खजाना खोजने के चक्कर बुरे फंसे 5 लोग

» खजाना खोजने बकरा,नारियल और नींबू लेकर बैगा के साथ सरगुजा से 5 लोग पहुंचे थे कोरबा, पुलिस ने पहुंचाया सही जगह....

कोरबा,12 नवम्बर 2024(ए)। सरगुजा जिले के उदयपुर से खजाना की तलाश में सोमवार को कोरबा पहुंचे बैगा समेत 5 लोग उस समय बुरे फंस गए, जब पुलिस ने उन्हें उठाकर हवालात में बंद कर दिया। बलि के लिए लाए गए बकरे को पुलिस ने जब्त कर उनके पास रहे तांत्रिक पूजा में इस्तेमाल होने वाला नींबू, नारियल और पताका सहित अन्य सामान भी बरामद किया। पुलिस ने बैगा समेत 5 लोगों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की।

बताया जा रहा है कि सरगुजा जिले के उदयपुर क्षेत्र निवासी 5 युवक कोरबा जिले के बांगो थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम मातिन में राम-जानकी मंदिर के पास पहुंचे थे। मंदिर की चारदीवारी से लगे जमीन के किनारे एक भूखंड पर पूजा-अर्चना कर रहे थे। मौके पर बकरा, अगरबत्ती, नींबू, नारियल और पताका आदि रखे थे। इसी बीच इन पर मातिन के रहने वाले लोगों की नजर पड़ी।जब उन्होंने पूछताछ की तब युवकों ने यह कहकर सफाई दी कि वे मातिन में मंदिर बनाना चाहते हैं और इसके लिए भूमिपूजन करने आए हैं। लेकिन युवकों के साथ आए बैगा, बकरा, नींबू और पताका सहित अन्य पूजन सामग्री को देखकर ग्रामीणों को आशंका हुई। उन्हें लगा कि बैगा के साथ आए लोग उनके गांव में हंडा (खजाना) की तलाश में आए हैं।गांव के लोगों ने घटना की सूचना सरपंच को दी। सरपंच ने बैगा व अन्य लोगों से पूछताछ की। लेकिन संतोषजनक जवाब नहीं मिला। इसके बाद तब मातिन के लोगों ने बैगा और 5 अन्य लोगों को घेर लिया और घटना की सूचना बांगो थाने में दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और पांचों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की। उन्हें गिरफ्तार किया और बाद में थाने से ही जमानत पर रिहा कर दिया गया।

कई बार खजाने की तलाश में पहुंचा है गिरोह

मातिन के सरपंच रमाकांत श्याम ने बताया कि उनके गांव में पहले भी हंडा की तलाश में गिरोह पहुंचते आया है। मातिन ऐतिहासिक स्थल है और यहां इस क्षेत्र की जमींदारी प्रथा के समय से ही मंदिर है। लोगों का मानना है कि मंदिर के आसपास हंडा या खजाना हो सकता है। इसकी तलाश में कई बार आसपास के क्षेत्रों से लोग यहां आते रहे हैं।पुलिस ने भी इस घटना को लेकर बैगा सहित अन्य लोगों से पूछताछ की है। पुलिस का कहना है कि ग्रामीणों की शिकायत पर पांचों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई और उनके बकरा को जब्त कर लिया गया। पूजन सहित अन्य सामाग्री को भी जब्त किया गया है।

महिला को किया बदनाम

» आरोपी युवक ने सोशल मीडिया में पोस्ट किया निर्वस्त्र वीडियो

कांकेर,12 नवम्बर 2024(ए)। पखांजूर क्षेत्र के ग्राम शारदानगर में मानवता को शर्मसार करने वाली एक तस्वीर सामने आयी है। दरअसल ग्राम शारदानगर का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें रात के अँधेरे में गाँव की एक महिला जो अर्धनग्न अवस्था में अपने कपड़ों को हाथों में लेकर दौड़ रही हैं और उस महिला का गाँव के युवक द्वारा पीछा करते हुए उनकी अश्लील वीडियो बनाया जा रहा है। महिला युवक से वीडियो न बनाने की गुहार लगाती रही पर युवक द्वारा न केवल महिला का अश्लील वीडियो बनाया गया, बल्कि उस वीडियो को वायरल भी किया गया। जिसके बाद महिला पखांजूर थाने पहुँची और युवकों के खिलाफ शिकायत करवायी। दरअसल महिला अपने निजी स्थिति में थी तभी उसी गाँव का युवक गोष्टो डाकुआ नाम का युवक पहुंचा और महिला के निजी पलों में बाधा डाला । युवक को देखकर महिला ने तत्काल कपड़े पहनने शुरू किये पर युवक द्वारा उससे पहले ही महिला के साथ गलत काम करने के उद्देश्य से उसका पीछा किया गया और इस पूरे घटना का युवक द्वारा वीडियो बनाकर वायरल किया गया।

बस्तरांचल आदिवासी युवती की जिंदगी बनी नर्क

» मुंबई में डेढ़ साल बंधक बनाकर दुष्कर्म...

» केमिकल से जलाने के भी आरोप...

कोंडागांव,12 नवम्बर 2024 (ए)।आदिवासी युवती का अपहरण कर उसके साथ डेढ़ साल तक दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। आदिवासी युवती किसी तरह से भागकर अपने घर आई और परिजनों को आपबीती बताई।इसके बाद पुलिस ने उसका मेडिकल कराया.युवती फिलहाल अस्पताल में भर्ती है,जहां उसका इलाज किया जा रहा है।

सोशल मीडिया से हुई दोस्ती

माकड़ी थाना क्षेत्र में रहने वाली युवती का सोशल मीडिया के जरिए मुंबई के एक लड़के फिरोज अहमद से दोस्ती हुई.दोस्ती प्यार में बदली और फिरोज एक दिन कोंडागांव आ गया।जहां उसने युवती को शादी का झांसा दिया,इसके बाद उसे भगाकर अपने साथ मुंबई ले गया जहां युवती को नर्क नसीब हुआ.

आरोपी ने बंधक बनाकर किया दुष्कर्म

युवती की माने तो मुंबई जाने के बाद फिरोज रोजाना उसके साथ दुष्कर्म करने लगा.शादी करने की बात पर वो टालने लगा.यहां तक उसने दूसरे मोबाइल से घरवालों को ये बता दिया कि युवती ने शादी कर ली है और सही सलामत है।लिहाजा घरवालों ने भी युवती की कोई खोज खबर नहीं ली.फिरोज एक कपड़ा फैक्ट्री में काम करता था.वो जब काम पर जाता तब वो युवती के हाथ पैर बांध देता।

प्राइवेट पार्ट जलाने के आरोप

मुंबई में जान पहचान ना होने के कारण युवती किसी से आपबीती नहीं बता सकी.इस दौरान युवती के साथ मारपीट की गई। बार-बार युवक प्रताड़ित करके जान से मारने की धमकी देता और रेप करता.युवती का आरोप है कि आरोपी ने उसके प्राइवेट पार्ट में केमिकल डाले हैं.जिसके कारण वो पिछले कई महीनों से गंभीर

बीमारी से जूझ रही है. इन क्रूर यातनाओं से पीड़िता शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह कमजोर हो चुकी थी।

कमरे में नर्क जैसी जिंदगी

युवती को आरोपी ने जिस कमरे में रखा था,उसमें रोशनी नहीं आती थी। फिरोज ने छोटे से कमरे में डेढ़ साल तक युवती को प्रताड़ित किया.इस दौरान एक दिन युवक अपना मोबाइल ले जाना भूल गया जिसके बाद युवती ने फोन से फैक्ट्री के मालिक से बात की और आप बीती बताई.आप बीती बताने के बाद कंपनी के मालिक ने युवती को छुड़ाया और रेलवे स्टेशन भेजा। रेलवे स्टेशन आकर युवती ट्रेन में बैठकर रायपुर आई.जहां फैक्ट्री के मालिक के रिश्तेदारों ने युवती को कोंडागांव भिजवाया। 2 नवंबर की रात किसी तरह पीड़िता फिरोज के चंगुल से भागी थी,फिर कोंडागांव स्थित अपने घर पहुंची.कमजोर हालत में परिजनों ने उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टर्स ने उसके साथ हुए अत्याचारों का खुलासा किया।

ऑनलाइन गेमिंग के दौरान युवती और युवक के बीच संपर्क हुआ.इसके बाद दोनों में प्रेम संबंध स्थापित हुआ। इस दौरान शारीरिक संबंध के कुछ फोटो और वीडियो युवक ने ले लिए।. इनके आधार पर वो युवती को शादी करने के लिए कहता रहा। फिर दबाव बनाकर अपने साथ मुंबई ले गया जहां पर युवती के साथ अत्याचार हुआ। 2 नवंबर को भागकर युवती अपने गांव पहुंची।जहां उसके परिजनों ने अस्पताल में भर्ती कराया कौशलेंद्र देव पटेल, एडिशनल एसपी, कोंडागांव यूपी में मिली युवती की लोकेशन कोंडागांव पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर विशेष टीम का गठन कर आरोपी फिरोज अहमद की तलाश तेज कर दी गई है। धारावी निवासी फिरोज अहमद के मुंबई, दिल्ली और उत्तर प्रदेश स्थित ठिकानों पर कोण्डागांव पुलिस दबिश दे रही है। पुलिस ने बताया कि आरोपी की अंतिम लोकेशन उत्तरप्रदेश मिली है. जल्द ही उसे गिरफ्तार कर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।.

3 नवंबर:- युवती ने जिला अस्पताल के ओपीडी में उल्टी, दस्त और कमजोरी की शिकायत दर्ज कराई.।

4 नवंबर:- डॉक्टर्स ने उसके गुप्तांग और गले पर केमिकल से हुए घाव के निशान पाए. साथ ही, पता चला कि वह पिछले आठ महीनों से मासिक धर्म से वंचित है।

7 नवंबर:-कोण्डागांव पुलिस ने युवती के बयान के आधार पर आरोपी फिरोज अहमद के खिलाफ आईपीसी की धारा 376 (2)(ढ), 365, और 506 के तहत प्राथमिकी दर्ज की।

दूल्हा विदेश में था और दुल्हन भारत में वीडियो कॉल के जरिये संपन्न हुई शादी

रायपुर,12 नवम्बर 2024(ए)। एक अनोखी शादी का मामला सामने आया है, जिसमें दूल्हे-दुल्हन ने वीडियो कॉल के माध्यम से अपना निकाह किया. यह शादी इसलिए खास है क्योंकि दूल्हे के बॉस ने उसे छुट्टी नहीं दी थी. दूल्हा अदनान मुहम्मद जो छत्तीसगढ़ के बिलासपुर का निवासी है और तुर्की में काम करता था. उसकी प्लानिंग थी कि वह भारत आकर अपनी शादी करेगा, लेकिन उसकी छुट्टी की अर्जी तुर्की में उसके बॉस ने ठुकरा दी. यह उसकी शादी के लिए बड़ा झटका था, क्योंकि दुल्हन हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में रहती थी और शादी के लिए तैयारियां शुरू हो चुकी थीं. दुल्हन के बुजुर्ग दादा की स्थिति और उनका यह ख्वाहिश कि वह अपनी पोती की शादी देख पाएं, इस शादी की और भी अधिक अहमियत बढ़ा दी थी. इस स्थिति में दूल्हे और दुल्हन ने परिवारों के साथ मिलकर एक नया रास्ता अपनाया. अंत में यह जोड़ा वीडियो कॉल के जरिए शादी करने पर सहमत हो गया.

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)